साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली

वर्ष-30 अंक- 26 25 जून 01 जुलाई 2023 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए

ईदुल अज़्हा का पैग़ाम
पृष्ठ - 6

जिलहिज्जा का महीना
पृष्ठ - 7

बुज़ुर्गों पर बढ़ता दुर्व्यवहार

संस्कारविहीन समाज की पहचान

हम अक्सर अपने आसपास भी बहुत बार बुज़ुर्गों के प्रति दुर्व्यवहार देखते हैं, लेकिन सब जानकर भी चुप हो जाते हैं, सबको सम्मान से जीने का अधिकार है, कृपया जागरुक रहें, मदद करें, अपने नैतिक मूल्यों, संस्कारों और माता-पिता के साथ कभी बुरा व्यवहार न करें, इंसान बनकर मानवता के साथ जिएं।

आज के आधुनिक युग में समाज तेज़ी से बदल रहा है, लोग बड़े परिवार से छोटे-छोटे परिवार में विभक्त हो रहे है। युवा पीढ़ी को अपने मॉडर्न सोच पर गर्व महसूस होता है, वे अलग रहना पसंद करने लगे है, लोगों को अपना व्यक्तिगत स्वतंत्र स्थान चाहिए। बाहर पढ़ने जाना है, नौकरी करने जाना है, करियर को बुलंदी पर ले जाना है।

आजकल व्यक्ति बड़ा होने के बाद अपने भूतकाल, वर्तमान को भूलकर अपने भविष्य के लिए जीना पसंद कर रहा है अर्थात अपने बुजुर्ग माता-पिता द्वारा किये गए त्याग, समर्पण, संघर्ष और कार्य को भूलकर सिर्फ अपने खुद के भविष्य और अपने बच्चों के लिए विचार करने लगा है, परन्तु जिस वजह से वह इतना काबिल ज़िम्मेदार बना है उसे वह भूल रहा है, तो फिर ऐसे परिस्थिति में घर के उन बुजुर्गों की जिम्मेदारी किसके भरोसे छोड़ रहे है।

बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार के बढ़ते मामलों को उजागर करने और इसके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए जागरूकता स्वरुप विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस' प्रत्येक वर्ष 15 जून को मनाया जाता है। इस वर्ष 2023 की थीम सर्किल बंद करना वृद्धावस्था नीति में लिंग आधारित हिंसा, कानून और साक्ष्य आधारित प्रतिक्रियाओं को संबोधित करनाष् यह है। विश्व स्वास्थ्य संगठन अनुसार, 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के 6 में से लगभग 1 व्यक्ति ने, दुर्व्यवहार का अनुभव किया है। दीर्घकालिक देखभाल सुविधाओं जैसे संस्थानों में वृद्ध लोगों के साथ दुर्व्यवहार की दर अधिक है।

कोरोना महामारी के दौरान वृद्ध लोगों के साथ दुर्व्यवहार की दर में वृद्धि हुई है। वृद्ध लोगों के साथ दुर्व्यवहार से गंभीर शारीरिक चोटें और दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक परिणाम हो सकते हैं। वृद्ध लोगों के साथ दुर्व्यवहार बढ़ने की भविष्यवाणी की गई है क्योंकि कई देशों में तेजी से उम्र बढ़ने वाली आबादी का सामना करना पड़ रहा है। 60 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों की वैश्विक जनसंख्या 2015 में 90 करोड़ से बढ़कर 2050 में लगभग 200 करोड़ हो जाएगी। हेल्प एज इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के तकरीबन 82: बुजुर्ग अपने परिवारों के साथ रहते है, लेकिन वे अक्सर मौखिक दुर्व्यवहार, उपेक्षा और शारीरिक हिंसा का शिकार होते है। सर्वेक्षण में कहा गया है कि 35: बुजुर्गों ने अपने बेटों द्वारा दुर्व्यवहार का सामना किया और 21: ने अपनी बहुओं द्वारा दुर्व्यवहार की सूचना दी है। एजवेल फाउंडेशन ने इस विषय पर अपनें अध्ययन में पाया कि 73: वृद्ध लोगों ने लॉकडाउन के दौरान अपने घरों में विभिन्न प्रकार के दुर्व्यवहारों को सहन करने की सूचना दी।

आज समाज में हर तरफ बुजुर्गों के प्रति बढ़ते दुर्व्यवहार की ख़बरें. देखने-सुनने मिलती है, जो समय के साथ तेजी से बढ़ कर अमानवीय स्तर पर जा पहुंची है। सोशल मीडिया पर भी इस विषय से संबंधित वीडियो खूब वायरल होते रहते है। बुजुर्गों से दुर्व्यवहार अर्थात उन्हें जीते जी नर्क यातना देने जैसा है और बहुत शर्म की बात है कि यह यातनाएं उन्हें उनके अपने लोग दे रहे है। आज समाज में वह भी संपन्न वर्ग है जो बड़े शहरों या विदेश में जाकर बैठा है और उनके माँ- बाप यहाँ उनके आने की राह देखते हुए जिंदगी से विदा लेते हुए प्राण त्याग देते है फिर भी उनके बच्चे अंतिम संस्कार में भी नहीं आना चाहते है। धन दौलत प्राप्त करने के लिए, काम करवाने या उनकी सेवा न करनी पड़े इसके लिए बुजुर्गों पर अत्याचार किया जाता है। जो बच्चे अपने बुजुर्गों से दुर्व्यवहार कर सड़कों पर भिखारी की तरह या वृद्धाश्रम में लावारिस की तरह छोड़ देते है, अगर यही काम बुजुर्गों ने भी अपनी जवानी में अपने यही काम बुजुगों ने भी अपनी जवानी में अपने इन बच्चों को अनाथाश्रम या सड़क पर छोड़ा होता तो शायद वो आज ऐसे बुरे दिन नहीं देखते। बुजुर्गों पर बढ़ते दुर्व्यवहार के लिए आधुनिक जीवनशैली और संस्कारहीन समाज जिम्मेदार है। आधुनिक हमारे विचार होने चाहिए संस्कार नहीं। बड़े अपने बच्चों के सामने बुजुर्ग से दुर्व्यवहार करते है फिर बच्चे बड़ों का अनुकरण करते हुए अपने माँ-बाप से वैसा ही दुर्व्यवहार करते है और ऐसा ही सिलसिला चल पड़ता है।

समाज में अच्छाई दिखाने वाले बड़े-बड़े लोग भी अपने घर में बुजुर्गों से गलत व्यवहार करते नजर आते है। बुजुर्गों को सबसे ज्यादा अपनों के सहारे की जरूरत इसी उम्र में पड़ती है और यही वक्त है हमें उनका मजबूत सहारा बनकर उनके साथ रहने का। पहले मां-बाप बच्चों को पाल पोसकर बड़ा करते है, फिर बच्चे बड़े होकर उन बुजुर्ग माता- पिता की सेवा करते है, यही संस्कार और जीवन का नियम है। जितना लगाव माँ- बाप का अपने बच्चों के लिए रहता है, उतना ही लगाव हमें अपने बुजुर्गों से होना ही चाहिए। समय और मतलब निकल जाने के बाद अपनों से बदलता व्यवहार इंसान का नहीं होता। माँ-बाप से एक विनती है कि वे अपनों के प्रति या बच्चों के प्रति अंधा प्रेम ना करें अन्यथा यह आपको मुश्किल में डाल सकता है। बच्चों का भविष्य बनाने के चक्कर में इतना न खो जाये कि खुद के भविष्य को. भी दांव पर लगाना पड़े अर्थात समय और व्यवहार की स्थिति को भांपते हुए में निर्णय लें, क्योंकि बहुत बार ऐसा होता है कि बच्चों के लिए माँ-बाप खुद को भी बर्बाद कर उन्हें सवारते है और अगले ही पल वही बच्चें माँ-बाप को घर से अलग कर वृद्धाश्रम में भेज देते है। बुजुर्गों के लिए ऐसा व्यवहार लगातार बढ़ रहा है, इसलिए अब समाज में वृद्धाश्रम की संख्या भी बहुत बढ़ रही है।

बड़े-बुजुर्ग व्यक्ति से घर की शान होते है, घर में उनका आदर सबसे

बाक़ी पेज 11 पर

क़ुर्बानी के कुछ मसाइल

सवाल:- कुर्बानी की हक़ीक़त क्या है?

जवाब:- कुर्बानी दरहक़ीक़त हज़रत इब्राहिम अलै॰ की यादगार और इनकी पैग़म्बराना और रूहानी ज़िन्दगी की असली खुसूसियत और मिल्लत इब्राहिमी की असली पहचान है। यह सिर्फ खून बहाने और गोश्त खाने का नाम नहीं, बल्कि कुर्बानी नाम है रूह और दिल को खुदा की राह में न्यौछावर कर देने का! अल्लाह तआला का फरमान है (सूरह हज /5) खुदा के पास कुर्बानियों का खून और गोश्त नहीं पहुंचता इसके पास सिर्फ तुम्हारा तक़वा पहुंचता है।

यह आयत बताती है कि कुर्बानी का हुक्म दरअसल दिल कि तसलीम व रज़ा और सब्र शुक्र के इम्तिहान के बग़ैर दुनिया की पेशवायी और आख़िरत की नेकी नहीं मिलती।

सवाल:- कुर्बानी की फज़ीलत क्या है?

जवाब:- कुर्बानी की बहुत सी फज़ीलतें हदीसों में आई हैं एक हदीस में है कि जो व्यक्ति अल्लाह की राह में कुर्बानी करता है अल्लाह तआला उस जानवर के एक-एक बाल के बदले कुर्बानी करने वाले के एक-एक गुनाह को माफ़ फरमा देते हैं। हज़रत आयशा (रज़ि॰) से मरवी एक हदीस है कि नबी करीम (सल्ल॰) ने फरमाया कि कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी से ज़्यादा कोई भी अमल अल्लाह को महबूब नहीं कुर्बानी का यह अमल क़यामत के दिन सींगों, बालों और खुरों के साथ सामने आएगा। यानि इस के हर उजू का बदला मिलेगा। सींग बाल और खुर का भी और जब तुम कुर्बानी करते हो तो जानवर का खून अभी ज़मीन पर नहीं गिरता उससे पहले वह अल्लाह तआला के यहां पहुंच जाता है और अल्लाह तआला के यहां तकररुब का ज़रिया बन जाता है इन रिवायतों के अलावा और भी रिवायतें कुर्बानी की फज़ीलत के सिलसिले में किताबों हदीसों में मौजूद हैं।

इस्लामी दुनिया ..... इस्लामी दुनिया ..... इस्लामी दुनिया

बांग्लादेश में चुनाव से पहले मुश्किलें

सुबीर भौमिक

ढाका में हिंद महासागर सम्मेलन के दौरान भारत और बांग्लादेश के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच हुई वार्ता में अगले वर्ष वहां होने वाले चुनाव से जुड़ी कुछ अनिश्चितताएं सामने आई। कुछ समय बाद विदेश मंत्री एस जयशंकर को भी अपने ढाका दौरे में बांग्लादेश की ज़मीनी हक़ीक़त जानने का अवसर मिला। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना हालांकि ठीक स्थिति में दिख रही हैं, इसके बावजूद सब कुछ सामान्य नहीं लग रहा। बीएनपी के नेतृत्व में वहां के कट्टर इस्लामी विपक्ष ने कहा है कि अगर आगामी चुनाव मौजूदा सरकार के नेतृत्व में होता है, तो वह इसमें भाग नहीं लेगी, क्योंकि इसमें 'पिछली बार की तरह बड़े पैमाने पर धांधली होनी तय है।

अमेरिका सहित पश्चिमी शक्तियां एक गैर-पक्षपाती अंतरिम सरकार की निगरानी में चुनाव कराए जाने की विपक्ष की मांग का समर्थन कर रही हैं। दरअसल 2010 तक बांग्लादेश में अंतरिम सरकार की निगरानी में ही चुनाव कराने की परिपाटी थी, लेकिन उसी साल अवामी लीग की सरकार ने उस व्यवस्था को समाप्त कर दिया. .. जिसके पास संसद में भारी बहुमत था। हालांकि अवामी लीग के पास 2006-08 के अनुभव के बाद अंतरिंग सरकार के बारे में आशंकित होने के ठोस कारण हैं, जब सैन्य समर्थन से दो शक्तिशाली महिलाओं (शेख़ हसीना वाजेद और ख़ालिदा ज़िया) को हटाकर पिछले दरवाज़े से नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस को सत्ता सौंपी गई थी।

मोहम्मद यूनुस अमेरिका के चहेते हैं, जिन्हें बांग्लादेश का अशरफ ग़नी भी कहा जा सकता है। पर पश्चिमी समर्थन, बांग्लादेश में ग्रामीण बैंक लघु ऋण लाभार्थी नेटवर्क और नोबेल पुरस्कार जैसी विराट उपलब्धि को वह राजनीतिक रूप से रूपांतरित करने में स्पष्ट रूप से विफल रहे हैं। अब उन पर श्रम अदालत में मुकदमे भी चल रहे हैं। पर आश्चर्यजनक यह है कि इसके बावजूद वह अपने पश्चिमी संबंधों को बनाए रख सकते हैं। यूनुस के वकील ने तो अदालत में यह दावा तक किया है कि उन्हें दूसरा नोबेल मिल सकता है। ऐसा लगता है कि अमेरिका बांग्लादेश में यूनुस को आगे रखकर, सोशल मीडिया पर बड़े पैमाने पर सरकार विरोधी अभियान चलाकर तथा मानवाधिकार व लोकतंत्रा के मुद्दे उठाकर सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहा है। यह वैसा ही अभियान है, जैसा उसने 2013 में यूक्रेन में किया था। पर पश्चिमी दबाव बढ़ने से शेख हसीना चीन के करीब आ सकती हैं, संयुक्त राष्ट्र में जिसका वीटो बांग्लादेश के खिलाफ लगने वाले प्रस्तावों को रोकने में सक्षम है। भारत की यहां दो स्पष्ट सीमाएं हैं- उसके पास संयुक्त राष्ट्र का वीटो नहीं है, और चीन का मुक़ाबला करने के लिए अमेरिका के साथ रणनीतिक गठजोड़ भारत को बांग्लादेश के मुद्दे पर वाशिंगटन से जवाब-तलब करना मुश्किल बना देगा। फिर भारत में अब प्रणब मुखर्जी जैसे अनुभवी राजनीतिज्ञ की कमी है, जो बांग्लादेश को अच्छी तरह से जानते थे।

यदि बांग्लादेश म्यांमार (और श्रीलंका) के रास्ते पर चला जाता है, तो फिर पड़ोस में भारत के लिए क्या बचेगा? वैसे में, अपने सबसे बड़े एशियाई प्रतिद्वंद्वी को रणनीतिक रूप से घेरने का चीन का काम लगभग पूरा हो जाएगा। और यदि बांग्लादेश में यूक्रेन जैसा एक अमेरिकी अ०परेशन काम करता है, तो भारत को बांग्लादेश में एक इस्लामी व्यवस्था के साथ तालमेल बिठाना होगा, जो अवामी शासन के पिछले 14 वर्षों के दौरान हुए बहुत से लाभों पर पानी फेर सकता है। बीएनपी अध्यक्ष ख़ालिदा ज़िया ने धमकी दी ही है कि सत्ता में आने पर वह हसीना द्वारा भारत के साथ किए तमाम समझौतों की समीक्षा करेंगी। इस साल हुए गोपनीय सर्वेक्षण के मुताबिक, अगर अवामी लीग अपने मौजूदा सांसदों के साथ चुनाव मैदान में उतरती है, तो 300 सदस्यों के सदन में उसे केवल 32-47 सीटें मिलेंगी। लेकिन सर्वे, जिसकी रिपोर्ट इस लेखक ने देखी है, यह भी बताता है कि अगर अवामी लीग अपने सबसे लोकप्रिय उम्मीदवारों के साथ चुनाव मैदान में उतरती है, तो वह 83-117 सीटों पर जीत हासिल कर लेगी। लेकिन यदि सरकार अगले छह महीने में अच्छा प्रदर्शन करती है और कुछ महत्वपूर्ण कार्रवाई के ज़रिये भ्रष्टाचार और आवश्यक वस्तुओं की कीमतों पर रोक लगाती है, तो सर्वे के मुताबिक, अवामी लीग 140 सीटों के करीब पहुंच सकती है, क्योंकि तब 37 फीसदी मतदाता अपना मन बदल सकते हैं।

इसलिए हसीना पर भ्रष्ट और अक्षम मंत्रियों को बदलने तथा पार्टी में विशेष रूप से गृह, वित्त, विदेश, सूचना, उद्योग, वाणिज्य और जल संसाधन मंत्रालय में साफ-सुथरे चरित्रा वाले नेताओं को जगह देने का दबाव बढ़ रहा है। कुछ लोगों ने अमीर हुसैन अमू और बहाउद्दीन नसीम जैसे दिग्गजों को मंत्रिमंडल में शामिल करने का सुझाव दिया है, ताकि सरकार को क़ानून और व्यवस्था के बढ़ते संकट से उबारने में मदद मिल सके। इस वजह से भारतीय दबाव भी बढ़ गया है, क्योंकि भारत अवामी लीग को सत्ता में वापस देखना चाहता है, लेकिन निष्पक्ष चुनाव के ज़रिये, जिससे न सिर्फ पश्चिमी जुमलेबाज़ी बंद हो सकती है, बल्कि वह स्थिति बांग्लादेश को एक दलीय शासन में जाने से भी रोकेगी, जिससे चीनी वर्चस्व बढ़ने की ही आशंका है।

भारत को सबसे ज्यादा चिंता वहां एक भ्रष्ट और शक्तिशाली सिंडिकेट (राजनेता, नौकरशाह, सेनानायक और उद्योगपति) के बढ़ते असर से है, जो पाकिस्तान समर्थक उद्योगपति के नेतृत्व में प्रधानमंत्री को सलाह देता है और चीन तथा अमेरिका, दोनों के साथ है। यह वह गिरोह है, जो व्यापक मनी ल०न्ड्रिंग, बैंक धोखाधड़ी और लूट के अपने शासन को बनाए रखने के लिए किसी भी तरह सत्ता में वापसी चाहता है और जिस कारण वैश्विक मंदी के बीच बांग्लादेश के विदेशी मुद्रा भंडार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

भारत केवल यह उम्मीद कर सकता है कि हसीना अपने पिता शेख़ मुजीबुर रहमान के उस प्रयोग को नहीं दोहराएंगी, जिसके तहत सांविधानिक परिवर्तन के जरिये उन्होंने बांग्लादेश कृषक श्रमिक अवामी लीग को देश की इकलौती पार्टी घोषित कर दूसरी पार्टियों को गैरकानूनी ठहरा दिया था। साफ है कि बांग्लादेश को बांग्लादेश ही बने रहना चाहिए, बंगाली पाकिस्तान नहीं। ❑❑

यह दिल्ली है ..... यह दिल्ली है ..... यह दिल्ली है

दिल्ली : भूतों की कहानी सुनने मालचा महल पहुंच रहे पर्यटक

राष्ट्रपति भवन के सामने सेंट्रल रिज एरिया में स्थित मालचा महल ने अपनी शुरुआत के कुछ दिन बाद ही लोगों को लुभाना शुरू कर दिया है। हाल ही में हॉन्टेड हाउस नाम से शुरू किया गया ऐतिहासिक स्मारक मालचा महल लोगों को आकर्षित करने लगा है।

देश ही नहीं, विदेशी पर्यटक भी भूतिया महल की कहानी सुनने व इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं। महल को देखने आने वाले युवाओं में खासा उत्साह है। चाणक्यपुरी स्थित इस महल में जाने के लिए उबड़-खाबड़ मार्ग से गुजरकर रास्ता तय करना पड़ता है। चारों ओर जंगल व बीच रास्ते में सियार, बंदर, बिल्ली, गाय व चमगादड़ दिखाए देते हैं। इसी रास्ते से होकर कंटीली घनी झाड़ियों के बीच में यह महल है। पर्यटकों को दूर से ही यह स्मारक भूतिया होने की अनुभूति कराता है। इसके अंदर जाते ही इसमें पसरा अंधेरा डराने वाला होता है। बता दें सुल्तान फिरोज शाह तुगलक ने 1325 में इस महल को अपने शिकारगाह के लिए बनवाया था। अवध के नवाब के शाही परिवार का सदस्य होने का दावा करने वाली महिला बेगम विलायत महल 1985 में अपने परिवार के साथ यहां रहने लगीं, इसके बाद इस जगह को विलायत महल के नाम से जाना जाने लगा। दिल्ली टूरिज्म टूरिज्म ट्रांसपोर्टेशन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (डीटीटीडीसी) ने यहां हुई घटनाओं के चलते इसे हॉन्टेड हाउस माना है। हालांकि, महल की जर्जर हालत देखकर यह अंदाजा लगाना मुश्किल है कि कभी यहां कोई रहा होगा। इसी जर्जर महल में उनके बाद इनके परिवार के अन्य लोगों की भी यहीं एक-एक कर मौत हो गई। इस परिवार की अंतिम मौत विलायत महल के बेटे अली रजा की वर्ष 2017 में हुई। उसके बाद से यह जगह सुनसान है। यहां न कोई खिड़की है, न बिजली

बाक़ी पेज 11 पर

प्रत्येक जोन में बनाया जाएगा एक पिंक पार्क : शैली ओबेरॉय

दिल्ली नगर निगम की सत्ता में आप के आने के बाद पार्कों से लेकर स्कूलों को सुधारने के लिए महापौर द्वारा विभिन्न विभागों की बैठकें ली जा रही हैं। इसी कड़ी में महापौर डा. शैली ओबेराय ने सोमवार को उद्यान विभाग के अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक की। महापौर ने विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। बैठक के बाद महापौर ने बताया है कि पहले चरण में 150 पार्कों की स्थिति सुधारी जाएगी। इसके तहत प्रत्येक जोन में एक पिंक और एक स्कल्पचर पार्क भी बनाया जाएगा।

महापौर ने बताया कि जिन पार्कों को सुधारा जाना है जोन के अनुसार उनकी सूची तैयार हो गई है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के दिल्ली के पार्कों को हरा-भरा बनाने के विजन को साकार करना है। पहले चरण में एक एकड़ से ऊपर के पार्कों को तीन माह के भीतर विकसित किया जाएगा। इसमें पार्कों में घास से लेकर पौधे लगाए जाएंगे। वहीं, जिन पार्कों को पिंक और स्कल्पचर पार्क के तौर पर विकसित किया जाना है, उनकी सूची जल्द ही बना ली जाएगी। निगम के अनुसार, एमसीडी की ओर से सेंट्रल जोन में 17, साउथ जोन में 10, करोल बाग जोन में 10, सिटी एसपी जोन पांच, शाहदरा नार्थ जोन में 22, शाहदरा साउथ जोन में 13, नरेला जोन में छह, रोहिणी जोन में 28, पश्चिमी जोन में छह, नजफगढ़ जोन में 17, केशवपुरम जोन में 18 और सिविल जोन पांच में पार्क विकसित किए जाएंगे।

संवारा जाएगा तुर्कमान गेट, पर्यटकों को करेगा आकर्षित

ऐतिहासिक तुर्कमान गेट जल्द नए रंग-रूप में नजर आएगा। गेट में जगह-जगह से उखड़े पत्थरों को फिर दोबारा लंगाकर सौंदर्यीकरण किया जाएगा। बारिश व मौसम की वजह से गेट पर आई दरारों को भरा जाएगा। यहां रंगीन लाइट की व्यवस्था की जाएगी जिससे दिल्ली का यह ऐतिहासिक दरवाजा रात को भी चमक बिखेरेगा। इससे देश के अलावा विदेशी पर्यटकों को भी यह आकर्षित करेगा। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) ने इसे संवारने की योजना बनाई है। एएसआई का कहना है कि इसके संरक्षण का कार्य एक से डेढ़ माह तक चलेगा। जी-20 शिखर सम्मेलन की बैठक को देखते हुए इसका जल्द संरक्षण होगा। राष्ट्रमंडल खेल के समय गेट को संवारने का काम किया गया था। हालांकि, इसके बाद समय-समय पर मरम्मत कार्य किए गए जाते रहे हैं। वर्ष 1650 में इस गेट का निर्माण कार्य किया गया था। शाहजहां ने इस.गेट का नाम उस समय के मशहूर सूफी संत शाह तुर्कमान बियाबानी के नाम पर रखा गया था। मुगलों ने दिल्ली में कई गेट का निर्माण किया, जिसमें तुर्कमान गेट भी इसी का एक हिस्सा है। इस गेट को लाल बलुआ पत्थरों से बनाया गया था। एएसआई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि आंधी व बरसात से गेट को नुकसान भी पहुंचा है। दिल्ली के अन्य दरवाजों की तरह ही तुर्कमान गेट पर संरक्षण कार्य के बाद सौंदर्यीकरण किया जाएगा। इस गेट के निर्माण कार्य और महत्व को दर्शाने के लिए नए सूचक बोर्ड भी लगाए जाएंगे।

संपादकीय

शांति मिशन

हज की कुर्बानी और इंसानी तालीम ही बेहतरीन ज़रिया है

इस्लाम जीवन की एक संपूर्ण प्रणाली है जिसमें जीवन के हर पहलू में अपने अनुयायियों के लिए मार्गदर्शन है। इस्लाम का कोई भी आदेश ज्ञान से रहित नहीं है। इस्लाम ने जहां खुशी के मौके पर शुक्र अदा करने का हुक्म दिया है, वहीं गम के मौके पर सब्र करने की भी सलाह दी है। इस्लाम में तीन प्रकार की इबादतें हैं, एक केवल मानव शरीर से संबंधित है, जैसे कि नमाज़, दूसरी केवल धन से संबंधित है, जैसे ज़कात और दान, और तीसरी इबादत शरीर और शरीर का संयोजन है, जैसे कि बीज, आदि कि इसमें जान और पैसा ख़र्च होता है। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने हज का फर्ज़ उन्हीं पर दिया है जो सक्षम और शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं। कठिन परिश्रम सहन करने की शक्ति है। हज कर्तव्य और कुर्बानी इब्राहीमी अलैहि. की एक याद है जो क़यात के दिन तक जीवित रहेगा। पवित्र कुरान की कई आयतों में अल्लाह के घर हज का उल्लेख किया गया है, जिसमें हज के सभी आवश्यक नियमों और कर्तव्यों को स्पष्ट किया गया है। अल्लाह उससे खुश रहे पवित्र कुरान कहता है: और अल्लाह के लिए, अल्लाह के घर का हज्ज उन लोगों पर किया जाता है जो उस तक पहुंचने में सक्षम हैं। (आले इमरान)

वास्तव में, हज अल्लाह द्वारा बनाई गई इस पवित्र भूमि की यात्रा का नाम है, जहां सबसे पहले हजरत आदम (उसे शांति मिले), फिर हजरत इब्राहिम अले. हज़रत इस्माइल अले. और खातम-उल-नबीयिन हजरत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल.) जैसे कि अज़ीम-उल-मुरातबत पैगंबर। उनकी उपस्थिति से, पैगंबर (सल्ल.) ने अपने अल्लाह की आज्ञाकारिता और सेवा का कर्तव्य निभाया और अपनी आज्ञाकारिता और दासता की प्रतिज्ञा की। इसलिए, एक आस्तिक की सबसे बड़ी खुशी यह है कि वह अपने दिल में ईश्वर के प्रेम और ईश्वर के प्रेम से भर जाता है। और बैतुल्लाह शरीफ़की रोशनी और आशीर्वाद के साथ कलेजा भर दें। इसी ग़ैब से प्रेम की अभिव्यक्ति है कि जब हाजी एहराम बांधता है तो उसकी जुबां से अल्लाहुम्मा लब्बैक की आवाज़ आने लगती है, इस पुकार से हाजी में आज्ञाकारिता और सेवा की भावना जागृत हो जाती है और वह अपनी इच्छाओं को वश में कर सकता है। जुनून बढ़ने लगता है। हज बैतुल्लाह की ख़ासियत यह है कि हाजी अल्लाह खुदा और हज की नज़र में बरकत बन जाता है।

बाद में, उनके जीवन में परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है, जैसे कि उन्होंने हज बैतुल्लाह के लिए आवश्यक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पूरा कर लिया हो।

स्रोत वांछित है और इसके अल्लाह द्वारा इरादा है। सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यह सम्माननीय कथन है कि:

एक के बाद एक हज और उमरा करें क्योंकि ये दोनों इस तरह से तंगी और गुनाहों से दूर करते हैं।

जैसे भट्टी लोहे, चाँदी और सोने को अलग कर देती है। (मिश्कवत अल-सलीह) यही कारण है कि हज बैतुल्लाह को आध्यात्मिक प्रशिक्षण और विश्वासियों के लिए अल्लाह की ओर मुड़ने का सबसे अच्छा साधन घोषित किया गया है, क्योंकि यह आज्ञाकारिता और आत्म-समर्पण का एक बड़ा प्रकटीकरण है। जिसके दूरगामी प्रभाव एवं पराकाष्ठा उसके व्यवहारिक जीवन पर स्थापित हो जाते हैं, जिसके पश्चात् उसका जीवन निस्संदेह न केवल देश व राष्ट्र के लिए अपितु सम्पूर्ण मानव जगत के लिए दया एवं सुख का स्रोत बन जाता है। ईद की रस्म का एक हिस्सा कुर्बानी के नाम से जाना जाता है, जो हज बैतुल्लाह का एक महत्वपूर्ण दायित्व है। कुर्बानी में परहेज़गारी, ईमानदारी, अल-बैत, रियाद-ए-नूम से दूरी, आत्म-समर्पण और खुदा के सामने आत्म-समर्पण शामिल है। कुर्बानी के वक़्त कुरआन की आयतों के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ के मर्म पर गौर करें तो आपको पता चलेगा कि कुर्बानी कोई मामूली चीज नहीं है बल्कि वो शब्द हैं जो दिल से निकलते हैं और ज़बान से पेश किए जाते हैं। अल्लाह की रज़ा के लिए कुर्बानी करने वाले की कुर्बानी अल्लाह कबूल करता है। मैंने अपना चेहरा आकाश और पृथ्वी के निर्माता की ओर कर दिया है, और मैं एक बहुदेववादी नहीं हूं।' फिर, इसे मज़बूत करने के लिए, इसमें एक और आयत जोड़ी जाती है, जिसका अनुवाद इस प्रकार है : 'मेरी दुआ, मेरी कुर्बानी, मेरा जीवन और मेरी मृत्यु सभी अल्लाह के लिए है, जो सभी संसारों का पालन-पोषण करता है।' ज़िब्हा के समय, इन आयतों की मिठास केवल इनाम के लिए नहीं है, बल्कि उस वादे और वाचा के नवीनीकरण के लिए है जो सेवक ने अपने अल्लाह से 'अब्द अल-असत' में की थी और जिसे वह इस पर आकर भूल गया है दुनिया, फिर जब किसी जानवर पर चाकू का इस्तेमाल किया जाता है, तो कुर्बानी करने वाले के लिए बिस्मिल्लाह अल्लाहु अकबर कहते हुए चाकू का इस्तेमाल करना ज़रूरी है। इसमें कोई निजी स्वार्थ नहीं है, बल्कि यह आपके अल्लाह की खुशी के लिए है। चाकू नीचे चला गया , खून के फव्वारे निकले, जानवर ने अपनी जान कुर्बान कर दी और आपकी कुब्रनी आपके रब के पास आपकी नेकी की वजह से पहुँची। अल्लाह की राह में दिखावा नहीं है अपने प्यारे बच्चों और अपनी पसंदीदा चीज़ों पर खर्च करने की इच्छा है? यदि ऐसा हुआ तो मेरी कुर्बानी व्यर्थ नहीं गई और आप भलाई के पात्र बने और यदि आज भी आपके हृदय में धन का प्रेम इस हद तक है कि आप हराम और हलाल में भेद किए बिना इसे लपेटने जा रहे हैं। हराम, धर्म का उत्कर्ष और वे अपने बच्चों को दावा और उपदेश के लिए बाहर नहीं जाने दे रहे हैं। आपको लगता होगा कि प्रार्थना के समय सभा में जाने से ग्राहक वापस आ जाएंगे, और हम खसारा की चपेट में आ जाएंगे। तुम पहले की तरह गुनाहों में हो और नेकी की तरफ मोह अब भी पैदा नहीं होता, तो समझो कि मेरी जिंदगी सही राह पर नहीं है, तुम्हारा कुछ भला नहीं हुआ। इस कुर्बानी को कुबूल करें, जैसे आपने हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम और उनके रसूल अलैहिस्सलाम की कुरबानी कुबूल की। 1 इस बलिदान के लिए: ईद अल-अनी की घटनाओं की श्रृंखला के माध्यम से नबियों के इन बलिदानों को आपने स्वीकृति का स्थान प्रदान किया है।

हर मुसलमान जागरूक है। वह जानता है कि इस्लाम में कुर्बानी की शुरुआत कहां से हुई और यह किसकी यादगार है। कुर्बानी का वास्तविक संबंध हमारे अल्लाह के साथ है यह इच्छा की प्राप्ति है, जिसका परिणाम आज्ञाकारिता है यह आज्ञा के रूप में आता है। यह ऐसा ही एक समारोह है, जो ईश्वर की एकता है साथ ही मनुष्य में एकता की भावना भी उत्पन्न होती है और सृष्टि की रचना का मूल उद्देश्य मिल जाता है.. इबादत की ओर ले जाता है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि ईद-उल-अजहा का यह शुभ उत्सव पिछले कुछ वर्षों से ऐसे हालात में आयोजित किया जा रहा है कि भारत मुस्लिम स्वतंत्रता के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण और शायद निर्णायक दौर से गुज़र रहा है। जो लोग राष्ट्रवाद के नाम पर अपनी विशिष्ट संस्कृति और कथित सभ्यता को पूरे देश पर थोपना चाहते हैं, वे अब देश के द्वार और छतों पर कब्ज़ा कर रहे हैं और देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संस्कृति का बंदी बनाने पर तुले हुए हैं। हालांकि यह स्थिति पूरे देश के लिए चिंता का विषय बनकर उभर रही है, लेकिन यह अल्पसंख्यकों, खासकर मुसलमानों के लिए एक बुरे सपने के रूप में उभर रही है। एक ओर उसे अपने धर्म, संस्कृति और सभ्यता की चिंता है तो दूसरी ओर देश की एकता उसे प्राणों से भी प्यारी है। उनके धर्म ने उन्हें सिखाया है कि देश प्रेम उनकी आस्था का एक हिस्सा है, इसलिए वे अपने लिए और देश की एकता और अखंडता के लिए पूरी तरह से चिंतित प्रतीत होते हैं। उन्हें इस बात की भी चिंता है कि आज राष्ट्रवाद के नाम पर खेले जा रहे खेल का मुकाबला करने के लिए कोई मजबूत ताकत नहीं है और देश की कानून व्यवस्था सांप्रदायिक जानवरों का चारा बन रही है. इस समय नेशन ऑफ इस्लाम के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि इन सबसे विकट परिस्थितियों में उन्हें अपने धर्म, अपनी संस्कृति और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए। हमारी राय में, बलिदान का यह कार्य गठन में इन प्रश्नों का वास्तविक और सच्चा उत्तर है। हज़रत इब्राहिम खलीलुल्लाह (शांति उस पर हो) ने अपने उपहार और पोषित बेटे को अल्लाह के लिए कुर्बान कर दिया उन्होंने हमें यह शिक्षा दी है कि हमें दृढ़ संकल्प के साथ झूठी शक्तियों से लड़ना चाहिए और उन्हें नष्ट कर देना चाहिए। यदि सरकार ने ही हमें इन दो विद्वानों के धन्य जीवन के माध्यम से इस भविष्यवाणी का पालन करने के लिएदृढ़ संकल्पित किया है, तो कोई कारण नहीं है कि झूठी ताकतें अपने काले चेहरे को न छिपाएं और पीछे हटने के लिए मजबूर हों। हम इस्लामी राष्ट्र की संतान हैं, हमारे महान पूर्वजों का खून हमारी रगों में दौड़ रहा है, जिसके लिए हमें पूरे संकल्प और साहस के साथ मैदान में उतरने की आवश्यकता है। आज अगर हम अपने पुरखे हजरत इब्राहिम अलैहिस्सलाम की राह पर चलें और उनके जीते-जी पैरों पर चलकर खुद को कुर्बानी के लिए पेश करें तो आने वाला इतिहासकार निस्संदेह हमें सुन्नत इब्राहिमी की मूल भावना को पुनर्जीवित करने वालों में गिना जाएगा। हम इसके बिना रह नहीं पाएंगे, इसलिए हमें दुआ करते रहना चाहिए कि, मेरे अल्लह, मुझे अपने खलील की सुन्नत का पालन करने की कृपा प्रदान करें। ❑❑

तारीख़े इस्लाम

सिरतुन्नबी स.अ.स. पर लिखी गई सबसे तफ़्सीली किताब

अर-रहीक़ुल मख़्तूम

लेखक: मौलाना सफीउर्रहमान मुबारकपुरी किस्त 10

बहरहाल कारण जो भी हो, घटनाओं का क्रम इस तरह है कि जब हुलैल का देहान्त हो गया और सूफा ने वही करना चाहा, जो वे हमेशा करते आए थे, तो कुसई ने कुरैश और किनाना के लोगों को साथ लिया और अक़बा के नजदीक, जहां वे जमा थे, उनसे आकर कहा कि तुमसे ज़्यादा हम इस पद के हक़दार हैं। इस पर सूफा ने लड़ाई छेड़ दी, पर कुसई ने उन्हें परास्त करके यह पद छीन लिया। यही मौक़ा था जब खुजाआ और बनूबिक्र ने कुसई से अपना दामन खींचना शुरू कर दिया। इस पर कुसई ने उन्हें भी ललकारा, फिर क्या था। दोनों फ़रीक़ों में घमासान की लड़ाई शुरू हो गई और दोनों ओर के बहुत-से आदमी मारे गए। इसके बाद समझौते की आवाज़ें उठने लगीं और बनूबिक्र के एक व्यक्ति यामर बिन औफ को अध्यक्ष बनाया गया। यामर ने फैसला किया कि खुजाआ के बाजए कुसई खाना काबा का मुतवल्ली बनने और मक्का की सरदारी अपने हाथ में रखने का ज़यादा हक़दार है, साथ ही कुसई ने जितना खून बहाया है, सब बेकार समझ कर पांव तले रौंद रहा हूं। अलबत्ता खुजाआ और बनूबिक्र ने जिन लोगों को क़त्ल किया है, उनकी दियत (जुर्माना) अदा करें और खाना काबा को बेरोक-टोक कुसई के हवाले कर दें। इसी फैसले की वजह से यामर की उपाधि शद्दाख पड़ गई। शद्दाख का अर्थ है पांव तले रौंदने वाला। (जारी)

इंटरव्यूह ..... इंटरव्यूह

मैं-मैं के अहंकार वाली इनेलो 26 फीसदी वोट से 2.6 पर आ गई

दुष्यंत चौटाला

साल 2018 में इनेला से अलग होकर नई पार्टी बनी जननायक जनता पार्टी। जींद का उपचुनाव, फिर 2019 का लोकसभा चुनाव, लेकिन सफलता नहीं मिली। उसके बाद साल 2019 का विधानसभा चुनाव, जिसमें 10 सीटें जीत कर भाजपा का सहयोग किया और बन गई हरियाणा में भाजपा- जजपा गठबंधन सरकार। लेकिन अब बयान आने लगे कि ये है भाजपा की सरकार, जजपा है केवल सहयोगी पार्टी। 2019 से अब तक आया कोरोना, किसान आंदोलन, विधानसभा में तीखी बहस की चुनौतियां। इन सब मुद्दों को लेकर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला के साथ बातचीत हुई। पेश है बातचीत के अंश :-

सवालः- आपके चाचा अभय चौटाला इन दिनों आपकी राजनीतिक पारी पर कटाक्ष करते हुए आपके सांसद बनने में खुद का अहम योगदान बताते हैं, क्या कहेंगे?

जवाबः- ऐसा कुछ भी नहीं है, मैं डॉ. अजय सिंह चौटाला और दादा ओम प्रकाश चौटाला व इनैलो काडर की वजह से सांसद बना। मेरे सांसद बनने में अभय चौटाला का कोई रोल नहीं है। कभी कहते हैं मैंने फीस भरी, कभी कहते हैं कि मैंने पढ़ाई के लिए विदेश भेजा। उनका मैं-मैं का यह अहंकार उनको ले डूबेगा क्योंकि अहंकार तो रावण का भी नहीं रहा था। उनके इस अहंकार के कारण ही कभी प्रदेश में 26 फीसदी वोट बैंक पाने वाली इनैलो आज 2.6 फीसदी वोट बैंक पर सिमट गई, रही बात हिसार से मेरे सांसद बनने की तो मुझे टिकट) ओम प्रकाश चौटाला ने दी थी व पढ़ाई में पहले पिता ने दाखिला करवाया था व विदेश की तालीम दादा ओम प्रकाश चौटाला की बदौलत मिली। उनके पैर के इलाज के लिए मुझे विदेश भेजा गया था और दादा ने वहीं पढ़ाई के लिए छोड़ दिया।

सवालः- सड़क से लेकर सदन तक कई बार अभय चौटाला की ओर से आप पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए जाते हैं, क्या कहेंगे?

जवाबः- मैं अभय चौटाला को सीरियस नहीं मानता, क्योंकि बिना तथ्यों के वह कुछ भी कह देते हैं। बीते विधानसभा सत्रा में उन्होंने हिसार एयरपोर्ट के पास की जमीन को मेरे नाम बता दिया था जबकि यह जमीन अंग्रेजों के जमाने से एक कंपनी की है, क्या कोई तथ्य दे पाए ? आरोप लगाना हो तो तथ्यों के साथ लगाएं।

सवालः- आपके दादा ओमप्रकाश चौटाला ने एक बार चंडीगढ़ प्रेसवार्ता में कहा था कि अगर उपमुख्यमंत्री ही बनना था तो अभय चौटाला के साथ रहकर भी बन जाते, क्या कहेंगे?

जवाबः- मुझे कुछ बनने की चाहत नहीं थी लेकिन 2018 में परिस्थितियां ऐसी बनी कि मुझे अलग से बजपा का गठन करना पड़ा। जनता का आशीर्वाद मिला व एक वर्ष की मेहनत में पार्टी को 10 सीटें मिली जहां सरकार में शामिल होने का मौका मिला।

सवालः- इनैलो की परिवर्तन पद यात्राा चल रही है। 90 दिन हो चुके हैं आपको लगता है कि इसका इनैलो का फायदा मिलेगा?

जवाबः- कौन सी पदयात्राा, कहां पर चल रही है? मुझे नहीं लगता कि कोई ऐसी पदयात्राा है वह तो कार यात्राा है।

सवालः- राजस्थान विधानसभा के चुनाव में जजपा चुनावी तैयारियों में लगी हुई है, क्या वहां भी भाजपा से गठबंधन होगा ?

जवाबः- बिल्कुल ठीक बात है, राजस्थान में हम चुनावी तैयारी कर रहे हैं। ड०. अजय सिंह चौटाला राजस्थान से विधायक रह चुके हैं और वहां हमारा जनाधार है। गठबंधन के मामले में अभी ऐसी कोई बात नहीं हुई है, लेकिन भाजपा हाईकमान के साथ समय आने पर इस संदर्भ में जरूर बात की जाएगी।.

सवालः- जब भी गठबंधन के बीच दरार की बात सामने आती है तो आप भाजपा हाईकमान के नेताओं से मिलने चले जाते हैं, क्या कहेंगे?

जवाबः- ऐसा नहीं है, भाजपा के बड़े नेताओं के साथ हमारे पुराने संबंध हैं। सांसद रहने के दौरान भाजपा नेताओं के साथ मुलाकात होती थी लेकिन यह भी सही है कि 2019 में हमारा गठबंधन भाजपा हाईकमान के नेताओं की बैठक में हुआ था इसलिए समय- समय पर मैं उनसे मुलाकात करता रहता हूं। प्रदेश के मुद्दों के बारे में हमारी पार्टी के प्रदेशाध्यक्ष निशान सिंह भाजपा के प्रदेश नेताओं के साथ बातचीत करते रहते हैं। ऐसे में जब कोई फैसला होगा, भाजपा हाईकमान के साथ मिल बैठकर होगा।

सवालः- जजपा के चुनावी घोषणा पत्रा में 5100 रुपए बुढ़ापा पेंशन देने का वायदा था, पूरा नहीं कर पाए। आप कहते हैं टीस है इसकी, तो अब क्या करेंगे आप?

जवाबः- हां, बिल्कुल मन में टीस है इस बात की। जिस दिन सूत बैठेगी, उस दिन पूरा कर दूंगा। फिर भी पैंशन 2750 रुपए हो गई है और धीरे-धीरे बढ़ेगी। गठबंधन की - सरकार है, इसमें 40 विधायक भाजपा के हैं व निर्दलीयों का भी है। अब इस एक मुद्दे पर गठबंधन छोड़ दूं तो क्या प्रदेश की जनता इसे स्वीकार करेगी। अन्य वायदों को पूरा किया गया है। हजारों फैसले लोकहित में एक साथ लिए गए हैं। सरकार का अभी डेढ़ साल का समय और बाकी है।

सवालः- जजपा के विधायकों में कई बार बगावती सुर देखते को मिलते रहते हैं, पार्टी में किस तरह का अनुशासन है, क्या कार्रवाई करेंगे?

जवाबः- कई बार किसी मुद्दे पर तल्खी हो जाती है लेकिन उसे दूर कर लिया जाता है। विधायक राम कुमार गौतम को अनुशासनहीनता के मामले में नोटिस दिया गया है, अभी तक जवाब नहीं आया है। अन्य विधायकों में बगावत जैसी कोई बात नहीं। हां, मैं कहता हूं कि ख़ाली प्रशंसा भी नहीं होनी चाहिए, सफलता के लिए आलोचना होना ज़रूरी है।

सवालः- किसान आंदोलन के दौरान जजपा नेताओं की मुख़ालफ़त हुई थी, क्या 2024 के चुनाव में सब कुछ ठीक हो जाएगा ?

जवाबः- राजनीतिक व्यक्ति के लिए हर समय चुनौती बनी रहती है, किस मुद्दे पर क्या चुनौती सामने आ जाए, पता नहीं होता। किसान आंदोलन के दौरान कुछ संगठनों की नाराज़गी सामने आई थी लेकिन अब ऐसा नहीं है, हमने किसान हित में जो फैसले किए, वह सबके सामने हैं। मेरा मानना है कि 2024 में सब कुछ ठीक है। जहां पर अपनापन होगा, वहां नाराज़गी भी होती है, इससे हमेशा सीखना चाहिए।

सवालः- निजी क्षेत्रों में 75 फीसदी आरक्षण का फैसला अभी सिरे नहीं चढ़ पाया है, क्या कहेंगे?

जवाबः- निजी क्षेत्रा में हरियाणा के युवाओं को 75 फीसदी आरक्षण देने का वायदा मेरा ही था, सरकार ने काफी समय पहले मंजूर कर दिया था लेकिन कानूनी पेंच के कारण लटका हुआ है, अभी समय है, इस बीच इसे लागू करवाने का प्रयास करूंगा।

सवालः- 2024 के चुनाव के लिए जजपा की क्या तैयारी है। अगला चुनाव क्या उचाना से ही लड़ेंगे ?

जवाबः- जजपा का संगठन दिनों दिन मज़बूत हो रहा है। नए सिरे से राष्ट्रीय व प्रदेश व जिला कार्यकारिणी का गठन किया गया है। गांव से लेकर शहर तक पार्टी को लोगों का सहयोग मिल रहा है। 2024 के विधानसभा व लोकसभा चुनाव में पार्टी

बाक़ी पेज 11 पर

मेरा नाम लेकर देश की बेटियों को दबा नहीं सकते, पहलवानों को इंसाफ़ मिलेगा : दीपेन्द्र हुड्डा

हरियाणा में डेढ़ साल बाद चुनाव होने हैं। राज्य में विधानसभा से पहले लोकसभा चुनाव होंगे। लेकिन प्रदेश कांग्रेस ने चुनावी तैयारियां अभी से शुरू कर दी हैं। पांच गारंटी की घोषणा भी कर दी गई है। पहलवानों का मसला भी गरमाया हुआ है। उसे भी कांग्रेस नेताओं के इशारे पर की जा ही कवायद बताया जा रहा है। विपक्षी एकता के प्रयास भी इस बीच तेज हुए हैं। प्रदेश राजनीति से जुड़े इन तमाम पहलुओं पर हरियाणा के सीनियर कांग्रेस नेता और राज्यसभा सांसद दीपेंद्र हुड्डा से बात की। पेश हैं बातचीत के अहम अंश।

सवालः- हरियाणा में आपने चुनाव की तैयारी डेढ़ साल पहले शुरू कर दी । किन मुद्दों पर चुनाव लड़ेंगे?

जवाबः- हरियाणा में बीजेपी-जेजेपी की सरकार हर मोर्चे पर विफल है। राज्य के लोग परेशान हैं। पूरे देश में सबसे ज्यादा बेरोजगारी हरियाणा में है। डबल इंजन की सरकार में डबल इंजन की लूट मची है। महंगाई चरम पर है। दोनों दल करप्शन में पूरी तरह लिप्त हैं। यह जनता का अपमान करने वाली सरकार है। इसने किसानों का अपमान किया। कर्मचारियों ने पुरानी पेंशन मांगी, तो उन्हें लाठी दी। मजदूरों ने मज़दूरी मांगी तो उन पर लाठियां बरसाईं। देश के लिए पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को सड़क पर ला दिया। आज पूरे राज्य के लोग भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व वाली कांग्रेस को हाथों-हाथ लेने को तैयार हैं।

सवालः- लेकिन विधानसभा चुनाव से पहले तो आम चुनाव होगा। पिछले लोकसभा चुनाव में आपको करारी हार मिली थी। इस बार पार्टी की क्या तैयारी है?

जवाबः- इस बार आम चुनाव में लोकसभा की लगभग सारी सीटें हम जीतेंगे। हरियाणा में जब से प्रदेश में नए नेतृत्व का गठन हुआ और पार्टी नेतृत्व ने इस पर विश्वास किया, तब से 23 पूर्व सांसद मंत्री कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं। इनमें अधिकतर सत्तारूढ़ दल के है।

सवालः- पिछले विधानसभा चुनाव में नेतृत्व को लेकर बहुत उलझन थी। फिर भी विधानसभा चुनाव में नजदीकी मुकाबला हुआ था। क्या इस बार पार्टी में नेतृत्व को लेकर स्पष्टता है ?

जवाबः- इस बार सही समय पर सही फैसला हुआ है। उदयभान को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाया गया। भूपेंद्र हड्डा पर विश्वास किया गया है। अब बारी इस फैसले को सही साबित करने की है। पिछली बार भी देखें तो कांग्रेस-बीजेपी में मात्रा 3900 वोट का अंतर था। हां, यह सही है कि तब मूड को भांपने में हमारे दल ने शायद देर कर दी। लोग तब भी बदलाव के लिए तैयार थे।

सवालः- आपने अभी से जनता के लिए पांच गारंटी की घोषणा कर दी। क्या यह कर्नाटक में मिली जीत का असर है ?

जवाबः- हमने हाथ से हाथ जोड़ो अभियान कर्नाटक चुनाव से पहले लॉन्च किया था। उसी अभियान के दौरान राज्य की जनता के लिए पांच गारंटी की घोषणा की। हरियाणा के बुजुर्गों को 6000 रुपया पेंशन। सरकार बनने के बाद 2 लाख युवाओं को नौकरी। 100-100 गज़ का प्लॉट और उस पर दो कमरे का मुफ़्त मकान। 300 यूनिट बिजली मुफ्त। हर महिला को 500 रुपये में सिलिंडर। पुरानी पेंशन योजना को लागू करना। खिलाड़ियों के लिए योजना। पहले हमने खेल में हरियाणा को विश्व चौंपियन बनाया। अब विकास के मोर्चे पर इसे पूरे देश में चौंपियन बना देंगे।

जवाबः- लेकिन सवाल उठ रहा है कि इन योजनाओं को लागू करने के लिए फंड कहां से आएगा?

जब हम सरकार में थे, उस समय के आंकड़े देखें। 2014 में प्रति व्यक्ति आय पूरे देश में सबसे अधिक हरियाणा में थी। निवेश सबसे अधिक इसी राज्य में था। हम विकास दर में सबसे आगे थे। दिल्ली के तीन तरफ हम हैं, जिसका लाभ उठाया। लेकिन आज हरियाणा 19 वें पायदान पर पहुंच गया। आज न विकास हो रहा है, न लोगों तक कोई लाभ पहुंच रहा है। विकास होगा तो रेवेन्यू बढ़ेगा। सरकार की कमाई बढ़ेगी। आएगा। इसका लाभ लोगों को मिलेगा। हम विकास और लोगों के कल्याण के लिए फंड की कमी नहीं देंगे और बात सिर्फ आगे की नहीं है। हमने पिछली बार भी किसानों को 1600 करोड़ की बिजली माफ की। प्रियदर्शिनी आवास योजना के तहत 2 लाख से अधिक लोगों को 100-100 गज के मकान दिए। तब भी हरियाणा को सरप्लस राज्य बनाया था।

सवालः- आप पर आरोप लगा कि जंतर-मंतर पर बैठे पहलवानों को भड़काया। क्या आंदोलन आपके इशारे पर चल रहा है?

जवाबः- जब किसान आंदोलन चल रहा था तो कहा गया कि हमने किसानों को भड़काया। जब युवा बैठे तो कहा गया कि हुड्डा युवाओं को भड़का रहे हैं। कोई हक मांगने सामने आता है तो वे हमारा नाम लेते हैं। इससे हमें कोई एतराज़ नहीं। लेकिन वह इस बात को समझ लें कि अगर मेरा नाम लेकर बेटियों की आवाज दबाना चाहते हैं तो ऐसा भी नहीं होने देंगे। हम उनके साथ खड़े हैं। ❑❑

मिज़ान ..... पूनम आई. कोशिश

देशद्रोह का नया व्याकरण
क्या सरकार स्वतंत्रता पर अंकुश लगा रही है

विधि आयोग ने देशद्रोह से संबंधित भारतीय दंड संहिता की धारा 124 (क) को बनाए रखने की सिफारिश की है क्योंकि राज्य की सुरक्षा और स्थिरता के लिए कानून द्वारा स्थापित सरकार का अस्तित्व बने रहना एक आवश्यक शर्त है। इस संबंध में 153 वर्ष पुरानी औपनिवेशिक विरासत को निरस्त करने की देश की सुरक्षा और एकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया है कि सभी विघटनकारी गतिविधियों को पनपने से पहले ही दबा दिया जाए।

जो कोई भी लिखित या बोले गए शब्दों या संकेतों से या अन्यथा विधि द्वारा स्थापित सरकार के प्रति घृणा फैलाने या उसकी अवमानना करने या उकसाने या उसके प्रति विद्वेष पैदा करने का प्रयास करता है. और जिसका उद्देश्य हिंसा को उकसाना हो या लोक व्यवस्था को भंग करना हो, उसे दंडित किया जाएगा।

इसके अलावा आयोग ने इस कानून के अंतर्गत सजा को बढ़ाकर आजीवन कारावास या 7 वर्ष तक के कारावास की सजा या जुर्माने का प्रावधान किया है। यह देश विरोधी और विभाजनकारी तत्वों का सामना करने में इस कानून की उपयोगिता को रेखांकित करता है। यह माओवादियों और पूर्वोत्तर तथा जम्मू-कश्मीर में अतिवादियों तथा आतंकवादियों की गतिविधियों का सामना करने के लिए भी उपयोग में लाया जाएगा क्योंकि इस कानून का उद्देश्य हिंसा और अवैध साधनों के माध्यम से निर्वाचित सरकार को पलटने के प्रयासों से उसकी सुरक्षा करना है।

विधि आयोग ने सुझाव दिया कि सरकार को एक नोबल दिशा-निर्देश बनाना चाहिए। देशद्रोह के मामले में प्रथम सूचना रिपोर्ट 7 दिन के भीतर पुलिस इंस्पैक्टर द्वारा प्रारंभिक जांच के बाद ही दायर की जानी चाहिए और उसके बाद ही इसकी अनुमति दी जानी चाहिए। हालांकि आयोग ने इस बात को स्वीकार किया कि राजनेताओं द्वारा इसका दुरुपयोग किया जाता है किंतु इसके लिए आयोग ने अपने राजनीतिक माई-बाप को खुश करने के लिए पुलिस के अति उत्साह को जिम्मेदार बताया।

सरकार ने कहा है कि आयोग की सिफारिश सुझाव के रूप में है और यह बाध्यकारी नहीं है तथा सभी हितधारकों से परामर्श कर इस बारे में निर्णय लिया जाएगा। उच्चतम न्यायालय ने पिछले वर्ष मई में देशद्रोह कानून पर रोक लगाई थी और कहा था कि यह विद्यमान सामाजिक वातावरण के अनुरूप नहीं है। स्पष्ट है कि न्यायालय एक संतुलन बनाने का कार्य कर रहा है हालांकि वह एक ओर राज्य के सुरक्षा. हितों और एकता तथा दूसरी ओर नागरिकों की स्वतंत्राता को भी स्वीकार कर रहा है। निःसंदेह, आयोग का निष्कर्ष न्यायालय के आदेश की भावना के विरुद्ध है।

इस धारा का सुनियोजित ढंग से दुरुपयोग किया जाता रहा है, जिसके अंतर्गत लोगों को तब भी गिरफ्तार किया गया, जब हिंसा से उनका संबंध सिद्ध नहीं हुआ था। यह हमारे गणतंत्रा के मूल्यों और आधारभूत सिद्धान्तों के प्रतिकूल है। आयोग ने इस कानून को सरकार का दर्जा दिया कि मानो यह राज्य हो। इसलिए देशद्रोह का प्रावधान अवधारणा की ष्टि से भी दोषपूर्ण है। यह उन लोगों की वाक् स्वतंत्राता पर अंकुश लगाने का साधन है, जो सरकार के विरुद्ध बात उठाते हैं।

वर्ष 2014 के बाद 13,000 से अधिक ऐसे मामले दर्ज किए गए और अनेक आरोपी जेल में हैं। इनमें से केवल 329 मामलों में दोषसिद्धि हुई है। केवल वर्ष 2019 में देश में इस कानून के अंतर्गत 93 नए मामले दर्ज किए गए। जबकि सरकार का द्य कहना है कि निहित स्वार्थी समूहों द्वारा विभिन्न विचारों के संबंध में अपना एजैंडा लागू करने का प्रयास किया जा रहा है। हम देश को उनकी विचारधारा से बचाना चाहते हैं। भारत और भारत के राष्ट्रवाद पर हमलों को रोकना चाहते हैं।

तथापि आज भारत स्वयंभू उग्र राष्ट्रवाद की चपेट में है जहां पर आलोचक, बुद्धिजीवी आदि निशाने पर हैं। जीवन एक आधिकारिक संकरी पटरी पर जिया जा रहा है। प्रत्येक ट्वीट, हास्य, व्यंग्य आदि को एक दानव के रूप में माना जाता है और इसके चलते सार्वजनिक बहस निरर्थक सी बनती जा रही है। देश में आज असहिष्णुता बनाम अभिव्यक्ति की स्वतंत्राता और व्यक्तिगत पसंद के बारे में बहस चल रही है और यदि यह प्रवृत्ति बिना अंकुश के बढ़ती रही तो समाज विखंडित हो जाएगा। जब भारत आत्मनिर्भरता के पथ पर आगे बढ़ रहा हो तो हमारे नेताओं को 140 करोड़ से अधिक जनसंख्या वाले देश में इस बात को समझना होगा कि यहां पर 140 करोड़ से अधिक विचार होंगे और वह लोगों के मौलिक अधिकारों पर अंकुश नहीं लगा सकती। साथ ही हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि हम भड़काऊ और घृणास्पद तथा संकीर्ण विचारों से बचें।

फिर इस समस्या का समाधान क्या है? क्या हम व्यक्ति की स्वतंत्राता पर अंकुश लगाएंगे या कट्टरवादियों "को बढ़ावा देंगे? किसी भी व्यक्ति को घृणा फैलाने की या उनके विचारों से हिंसा फैलाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उन्हें इस बात को समझना होगा कि कोई भी राष्ट्र दिल और दिमांग का मिलन है और एक भौगोलिक निकाय बाद में। साथ ही हमारे नेताओं को इस बात को समझना होगा कि आलोचना एक जीवंत तथा मज़बूत लोकतंत्रा का लक्षण है। कुल मिलाकर जब सरकार और न्यायालय देशद्रोह कानून के बारे में अंतिम निर्णय लें, तो उन्हें इस बात को ध्यान में रखना होगा कि हमारे देश में प्रक्रियागत सुरक्षोपाय कभी कामयाब नहीं होते क्योंकि यहां पर गिरफ्तार करने की प्रक्रिया अन्य सब प्रक्रियाओं पर भारी पड़ जाती है। इसका एक उदाहरण यह है कि पुलिस ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम की धारा 66 (क) का उपयोग इसको निरस्त करने के काफी. समय बाद किया। साथ ही ऐसे मामलों में दोषसिद्धि की दर बहुत कम है। यह बताता है कि ऐसे आरोपों में साक्ष्य नहीं होते।

विधि आयोग के सुझाव का, और व्यक्तिगत स्वतंत्राता के संबंध में उच्चतम न्यायालय द्वारा बल दिए जाने के साथ टकराव होता है। इसके अलावा धारा 124 (क) देशद्रोह की स्पष्ट परिभाषा देने में विफल रही है, जिसके चलते इसकी अस्पष्ट व्याख्या की गई है। निश्चित रूप से राज्य को आंतरिक और बाह्य आक्रमण से अपनी रक्षा करने में सक्षम होना चाहिए, किंतु ऐसे कार्य संवैधानिक अधिकारों की कीमत पर नहीं किए जाने चाहिएं।

साथ ही हमें इस बात को भी समझना होगा कि श्भारत एक लोकतांत्रिक देश है न कि बहुसंख्यकवादी देश, जहां पर सभी नागरिकों को बुनियादी अधिकार दिए गए हैं। जब लोकतंत्रा की बात आती है तो विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्राता सर्वोपरि है और हमारी संवैधानिक व्यवस्था में भी इन्हें अत्यधिक महत्व दिया गया है। यदि हम वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्राता की गारंटी नहीं दे सकते तो फिर हमारा लोकतंत्रा बचा नहीं रह सकता। ❑❑

रोज़गार .....

इलेक्ट्रिक चार्जिंग में रोज़गार के बढ़ते अवसर

भारत सरकार के आम बजट 2023 में इलेक्ट्रिक वाहनों का इस्तेमाल बढ़ाने के लिए क़दम उठाए हैं। इलैक्ट्रिक वाहनों में इस्तेमाल होने वाली लिथियम बैटरियों पर लगने वाले सीमा शुल्क के कम होने से देश में इलैक्ट्रिक वाहन सस्ते होंगे। वहीं, आर्थिक सर्वेक्षण 2023 में देश में इलैक्ट्रिक वाहन का बाजार 2030 तक करीब 49 प्रतिशत की दर से बढ़ने और सालाना बिक्री करीब 1 करोड़ इकाइयों के होने की उम्मीद है।

इससे रोज़गार के करीब 5 करोड़ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अवसर पैदा होंगे। हाल ही में आयोजित ऑटो एक्सपो में सभी बड़ी कम्पनियों का फोकस इलैक्ट्रिक वाहनों पर अधिक रहा। इस वजह से इलैक्ट्रिक वाहनों के चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी अधिक निवेश किया जा रहा है।

इससे नौकरियों और रोजगार के नए अवसर पैदा हो रहे हैं। आइए इस लेख में जानते हैं- कैसे इलैक्ट्रिक चार्जिंग के क्षेत्रा में करियर बना सकते हैं और कहां भविष्य के लिए अवसर उपलब्ध हैं :

पहले समझते हैं ई-वाहन के बारे में

ई-वाहन अर्थात इलैक्ट्रिक वाहन (ई.वी.) का मतलब इलैक्ट्रिक मोटर से चलने वाली गाड़ी है, जिसमें लिथियम- आयन या अन्य प्रकार की बैटरी का इस्तेमाल होता है। इलैक्ट्रिक वाहन पर्यावरण के अनुकूल होते हैं और पैट्रोल या डीजल के विकल्प के तौर पर इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। शुरूआती दौर में इलैक्ट्रिक वाहन एक चार्ज में 10 से 20 किलोमीटर दूरी ही तय कर पाते थे, लेकिन अब इस क्षेत्रा में लगातार शोध और उन्नत तकनीक के कारण अब ये 250 से 300 किलोमीटर या इससे अधिक की दूरी तय करने की क्षमता रखते हैं।

ई.बी. इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ करियर के खुले विकल्प

देशभर में ई.वी. सैगमेंट के विस्तार के साथ इसके इंफ्रास्ट्रक्चर पर अधिक जोर है। इसमें सबसे अहम चार्जिंग स्टेशन का विस्तार है। मैट्रो शहरों के साथ टियर-2, 3 शहरों में भी इसका विस्तार हो रहा है। सरकार के साथ बड़ी कम्पनियां इसमें निवेश कर रही हैं। इसकी वजह से करियर के नए अवसर भी खुले हैं।

इसमें मुख्य रूप से ई.वी. चार्जिंग स्टेशन तकनीशियन के तौर पर प्रमुख अवसर है। इसमें इलैक्ट्रिक वाहन (ई.वी.) चार्जिंग स्टेशन की सुचारू स्थापना और कमीशनिंग सुनिश्चित करने का काम होता है। वे ई.वी. चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए स्थान (साइट) की उपयुक्तता तय करने के अलावा सर्वेक्षण करते हैं और विभिन्न मापदंडों का मूल्यांकन करते हैं। इसके अलावा, उपयुक्त साइट पर ई.वी. चार्जिंग स्टेशन को स्थापित कर उसे चालू करते हैं।

दूसरा करियर विकल्प ई.वी. चार्जिंग स्टेशन के संचालन और रख-रखाव से संबंधित है। इसमें चार्जिंग स्टेशनों के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने के लिए कार्य किया जाता है। वे विभिन्न प्रकार के इलैक्ट्रिक वाहनों को चार्ज करने के लिए ग्राहकों को सहायता प्रदान करते हैं।

इस फील्ड में करियर बनाने के लिए न्यूनतम शर्तें इस क्षेत्रा में करियर बनाने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता संबंधित इंजीनियरिंग ट्रेड में आई.टी.आई. या 12वीं कक्षा तक पढ़ाई जरूरी है। इसके अलावा 18 वर्ष पार कर चुके युवा इस क्षेत्रा में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत कौशल प्रशिक्षण ले सकते हैं। उन्हें तकनीकी समझ होनी चाहिए।

इस क्षेत्र में करियर के अवसर क्यों हैं

नैशनल मिशन फॉर इलैक्ट्रिक मोबिलिटी ने इलैक्ट्रिक इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए अगले 8 वर्षों में 140 बिलियन रुपए का निवेश करने का लक्ष्य है। इसके लिए 'नैशनल इलैक्ट्रिक मोबिलिटी मिशन प्लान (एन. ई.एम. एम.पी.)- 2020' के तहत काम किया जा रहा है। ' इलैक्ट्रिक वाहन नीति 2019 में 2024 तक ऑफ- रोड टैक्स और पंजीकरण शुल्क माफ करने और उपकरणों को चार्ज करने पर भारी सबसिडी प्रदान करने की पेशकश की गई है।

- चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए, चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।
- आवासीय स्थानों पर कुछ शर्तों के साथ निजी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने की सुविधा दी जा रही है। कोई भी चार्जिंग स्टेशन 'ओपन एक्सेस प्रोटोकॉल' के माध्यम से किसी भी कम्पनी से बिजली प्राप्त कर सकता है।

भारत सरकार द्वारा एक विशेष हरित ऊर्जा कॉरिडोर का निर्माण पर जोर दिया जा रहा है। इससे देश में ई-वाहनों की मांग तेजी से बढ़ेगी।

- कहां मिलेगी नौकरी -ई.वी. चार्जिंग से जुड़े प्रशिक्षण के बाद नौकरी और स्वरोजगार दोनों ही विकल्प खुले रहेंगे। कई बड़ी कम्पनियों द्वारा ई.वी. चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जा रहे हैं, वहां नौकरी मिल सकती है। इस क्षेत्रा में कई स्टार्टअप कम्पनियों ने काम करना शुरू किया है, जिस वजह से वहां भी विकल्प मौजूद हैं। यदि आप नौकरी नहीं करना चाहते तो आप पूंजी लगाकर खुद का चार्जिंग स्टेशन स्थापित कर (इंडस्ट्री एक्सपर्ट सर्विस, ऑटोमोटिव स्किल्स डिवैल्पमैंट काऊंसिल) सकते हैं। इससे अच्छी आमदनी होगी। ❑❑

इस्लामी दुनिया

गोलीबारी में 3 फलस्तीनियों की मौत

यरूशलम : वेस्ट बैंक के जेनिन शहर की सड़कों पर चरमपंथियों के साथ भीषण संघर्ष में इजराइली सैनिकों की गोलीबारी में एक नाबालिग समेत तीन फलस्तीनियों की मौत हो गयी और इस दौरान कम से कम 29 लोग घायल हो गये। फलस्तीनी अधिकारियों ने यह दावा किया। वेस्ट बैंक में पिछले एक साल से अधिक समय से लगभग रोजाना हिंसा की घटनाएं सामने आ रही हैं। फलस्तीन के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मृतकों की पहचान ख़ालिद असासा (21), कासम अबू सरिया (29) और अहमद सक्र (15) के तौर पर की और बताया कि कम से कम छह अन्य लोग गोलीबारी में बुरी तरह जख़्मी हुए हैं।

जेल में डाल दें तो भी समझौता नहीं करूंगा : इमरान ख़ान

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान ख़ान ने कहा है कि वह देश में क़ानून के शासन के लिए लड़ाई जारी रखेंगे और अगर सरकार उन्हें जेल में डाल देती है, तो भी वह न तो कोई समझौता करेंगे और न ही आत्मसमर्पण करेंगे। यूट्यूब के माध्यम से राष्ट्र को संबोधन में खान ने कहा कि उनकी लड़ाई उनके देश और इसके लोगों के बेहतर भविष्य के लिए है। पीटीआई के 70 वर्षीय प्रमुख 19 मामलों में अपनी अग्रिम जमानत की अवधि बढ़ाने का आग्रह करने के लिए सोमवार को लाहौर से इस्लामाबाद पहुंचे। ख़ान 140 से अधिक मामलों का सामना कर रहे हैं।

पाकिस्तान को रूसी तेल, कमाई भारत की

कराची पहुंची रूसी तेल की खेप को लेकर पाकिस्तान में नया विवाद खड़ा हो गया है। पाकिस्तान की सरकार जहां, यह कहकर अपनी पीठ थपथपा रही है कि अब उसे भी भारत की तरह रूस से सस्ता तेल मिलने लगा है, वहीं स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स कुछ और ही खुलासा कर रही है। पाकिस्तानी मीडिया में यह दावा किया जा रहा है कराची बंदरगाह पर जो रूसी तेल मिला है, वह कच्चा तेल नहीं है। उसे भारत में रिफाइन किया गया है और संयुक्त अरब अमीरात के रास्ते पाकिस्तान पहुंचाया गया है। इस पर भारत ने अच्छी खासी कमाई की है। गत 11 जून को एक रूसी कार्गो शिप ही इस तेल को लेकर आया था। जब 45 हजार टन की यह खेप पहुंची तो पाकिस्तना के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा कि उन्होंने अपना वादा पूरा कर दिया।

ईदुल अज़्हा का पैग़ाम

सय्यदना हज़रत इब्राहीम खलील उल्लाह की अज़ीम कुर्बानी बेमिसाल इख़्लास और बलिदान की याद दिलाती है। प्रति वर्ष ईदुल अज़्हा कुर्बानी, फिदा हो जाना और जानिसारी का पैग़ाम लेकर आती है आइए आज ज़रा तफ्सील से इसकी समीक्षा करें और देखें कि हमारे जीवन कहाँ तक इस पैग़ाम पर अमल करने वाले हैं।

बुढ़ापे का ज़माना है बुढ़ापा ऐसा जिसमें कोई व्यक्ति बच्चे की आशा नहीं कर सकता लेकिन जब आपको बुढ़ापे यानि 90 साल की आयु में बेटे की बशारत मिली तो खुशी से झूम उठे और अल्लाह का शुक्र बजा लाए। हज़रत इस्माईल अलै. की विलादत बा सआदत के बाद एक आज़माइश आती है। हुक्म मिलता है कि इस्माईल को उनकी वाल्दा के साथ बग़ैर पानी और घास वाले मैदान में छोड़ आओ कल्बे सादिक़ इस आज़माइश में पूरा उतरता है अपने इकलौते और लाडले दिल के टुकड़े को उसकी वाल्दा के साथ एक ग़ैर आबादी बयाबान में छोड़ आता है। जहां ज़ाहिर में जीवन यापन की बुनियादी आवश्यकताओं के माध्यम भी नहीं थे। यदि सहारा था तो मात्र उस ज़ात का जो प्रत्येक की आवश्यकताएं पूरी करता है जो प्रत्येक का सहारा है जो प्रत्येक को रोज़ी देता है गरज़ यह कि आज़माइश की घड़ियां बीत जाती हैं। यह अल्लाह का ख़लील (दोस्त) अपने रब के प्रत्येक आदेश को मान लेता है। मगर उन आज़माइशों के बाद एक और अंतिम आज़माइश बाकी रह गयी थी जिसके बाद आपको सारी दुनिया का इमाम और अल्लाह का ख़लील बनाया जाना था परीक्षा इस बात की थी कि अल्लाह का बंदा हर चीज से बढ़कर रब्बुल आलमीन से मुहब्बत करता है या नहीं? वह अपने इकलौते बेटे को जो उसे अत्यंत महबूब है रब्बुल आलमीन की ख़ातिर कुर्बानी कर सकता है या नहीं इस आज़माइश का समय जब आया तो फरिश्तों पर सकता सा छा गया। क्योंकि हज़रत इब्राहीम अलै. इश्क़ की अंतिम मंज़िल भी तय करने जा रहे थे वह इस परीक्षा में सफल होकर इताअत और आज्ञा पालन का एक उदाहरण स्थापित करने वाले थे। ग़ैब से इशारा पाते ही अपने दिल के टुकड़े हज़रत इस्माईल अलै. को अपने ही हाथों ज़िब्हा करने को तैयार हो गये।

हज़रत इस्माईल अलै. भी खुदा की मर्ज़ी पर प्रसन्न थे उनसे जब हज़रत इब्राहीम अलै. ने अपने सपने का हाल बयान किया कि अल्लाह का हुक्म है कि मैं तुम्हें उसकी राह में कुर्बान करूं। मैंने सपना देखा है कि मैं तुमको ज़िब्हा कर रहा हूं बताओ तुम्हारा क्या विचार है? बेटे ने बड़ी सआदतमंदी से उत्तर दिया आपको जो आदेश दिया जा रहा है उस पर अमल कीजिए? मुझ को इंशाअल्लाह सब्र करने वाला ही पाएंगे। हज़रत इब्राहीम अलै. और हज़रत इस्माईल अलै. ने अल्लाह के हुक्म पर बेमिसाल कुर्बानी प्रस्तुत करके रहती दुनिया तक यह सिद्ध कर दिखाया कि अल्लाह के हुक्म की तुलना में अपनी इच्छाओं की कुर्बानी ही एक मोमिन की शान है। इस्लाम अपने मानने वालों से यही मांग करता है कि उसकी तब्लीग़ व विस्तार और अल्लाह के निज़ाम (व्यवस्था) को स्थापित करने में बड़ी से बड़ी कुर्बानी दें।

कुर्बानी मात्र एक रीति ही नहीं बल्कि क़रार को नया करने वफा को ताज़ा करने और ईमान को ताज़ा करने का अवसर उपलब्ध करती है जिससे खुलूस का जज़्बा व बलिदान व बुझे हुए दिये (दीप) जल उठते हैं और ईमान व यकीन (आस्था) में बढ़ोत्तरी कर देते हैं। कुर्बानी मात्र ईदुल अज़्हा तक ही सीमित नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन अल्लाह के मतालबात के सिलसिले में ईसार व बलिदान का मैदान है जिसमें अपनी इच्छाओं एवं सभी प्रकार के लाभों का बलिदान अनिवार्य है। उसे कुर्बानी के गोश्त और खूंन की आवश्यकता नहीं है उसे तो तक़वा और अल्लाह का खौफ़ व जज़्बा चाहिए जो ईसार व कुर्बानी और अल्लाह के रास्ते में जान देने पर उभरता है वह तो यह चाहता है कि बंदा उसके छोटे से छोटे हुक्म पर भी अपनी जान व माल और सब कुछ कुर्बान कर दे। वह दुनिया का आदेश मानने वाला न हो बल्कि दुनिया को अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने और पाबंद रहने वाला बना दे। वह ज़माने के धारे के साथ नहीं बहता हो। बल्कि ज़माने को अपने इंकार को मानने वाला बना सकता है।

वर्तमान युग में मानवता की खस्ता हाली और एहतियात ज़ाहिर है। ईदुल अज़्हा का पैग़ाम यह है कि बातिल के विरुद्ध अपनी कुर्बानी पेश करके मानवता के धारे को मोड़ कर सही रास्ते पर लग जाओ और दूसरे को लगाओ हक़ सच्चाई के रास्ते में सामने आने वाले सारी मुसीबतों और कठिनाईयों का स्वागत सब्र व ज़ब्त से करो। आपस में मन मुटाव को समाप्त करके इब्राहीमी सुन्नत पर अमल करो और उसवए इब्राहीमी को माने रखकर अल्लाह के दीन फैलाने को और उसकी रज़ा और खुशी प्राप्त करने के लिए तैयार रहो। ❑❑

पाकिस्तान : धुम्रपान की समस्या बनती विकराल

पाकिस्तान जनसंख्या के मामले में दुनिया के सबसे बड़े देशों में से एक है और इसकी उच्च जन्म दर और कुल जनसंख्या में युवाओं का उच्च अनुपात है। फिर भी युवा लोगों, विशेष रूप से नाबालिग पाकिस्तानियों के लिए स्वास्थ्य जोखिम बढ़ रहे हैं क्योंकि धूम्रपान कम होने के बजाय बढ़ता जा रहा है। युवाओं में धूम्रपान और तम्बाकू उत्पादों के उपयोग की प्रवृत्ति पर विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा नियमित रूप से किए जाने वाले वैश्विक युवा तम्बाकू सर्वेक्षण को वैश्विक युवा तम्बाकू सर्वेक्षण कहा जाता है। पिछले साल किए गए ऐसे ही एक वैश्विक सर्वेक्षण के नतीजों के मुताबिक, पाकिस्तान में रोज़ाना करीब बारह सौ ऐसे नाबालिग बच्चे धूम्रपान करने लगते हैं, जिनकी उम्र महज़ छह से पंद्रह साल के बीच है। कुल मिलाकर, पाकिस्तान में हर साल 337,000 से अधिक लोग तंबाकू से संबंधित बीमारियों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मरते हैं। पाकिस्तान में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की स्थिति को किसी भी तरह से संतोषजनक नहीं बताया जा सकता है। लगातार आर्थिक और वित्तीय संकट के कारण स्वास्थ्य क्षेत्र को देश के बजट में पर्याप्त संसाधन नहीं मिल पाते हैं। इन परिस्थितियों में, सामान्य आबादी में धूम्रपान से उत्पन्न होने वाली चिकित्सा समस्याएं भी स्वास्थ्य क्षेत्र पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ का कारण बनती हैं। अर्थशास्त्रियों के अनुसार, यह अतिरिक्त वित्तीय बोझ निश्चित रूप से इसके लायक है यह तीन सौ अरब रुपये से अधिक है। कई कारण हैं कि क्यों कई पाकिस्तानी बच्चे कम उम्र में धूम्रपान करना शुरू कर देते हैं। मनोचिकित्सकों का कहना है कि साथियों का दबाव, तनावपूर्ण पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियां और सामाजिक अभाव इन कारणों में प्रमुख हैं। फिर जो पलायन या मौज-मस्ती के लिए शुरू किया जाता है वह जीवन भर की आदत बन जाती है जिसे तोड़ना बेहद मुश्किल होता है। एक और निर्णायक पहलू यह है कि जब सिगरेट और अन्य तम्बाकू उत्पाद हर जगह हर किसी के लिए उपलब्ध होते हैं, तो खरीदार की अपरिपक्वता उनकी खरीद के लिए व्यावहारिक रूप से कोई बाधा नहीं होती है, अगर इस संबंध में क़ानून और नियम हैं। देश के युवाओं को इस लत से बचाया जा सकता है और न ही धूम्रपान को सामाजिक रूप से हतोत्साहित किया जा सकता है। डीडब्ल्यू से बात करते हुए इस्लामाबाद के सेक्टर एफ-11 की रहने वाली 27 वर्षीय रोमेसा नियाजी ने डीडब्ल्यू को बताया कि कैसे धूम्रपान का अनुभव एक लत बन जाता है. वह सिगरेट और शराब चुराती थी. इस तरह धूम्रपान की आदत बन गई। वर्षों से मैंने इस आदत को छोड़ने की कई बार कोशिश की लेकिन कभी सफल नहीं हुआ। इस्लामाबाद की 19 साल की शाजिया कौल ने डीडब्ल्यू को बताया, 'मेरी आदत ई-सिगरेट से शुरू हुई थी' लेकिन अब बात बहुत आगे बढ़ चुकी है। मैंने अपने दोस्तों के वेंग और तंबाकू के पाउच भी देखे प्रयोग करने लगे तो लगने लगा कि सब कुछ हानिरहित है, कोई हानि नहीं होगी। लेकिन ऐसा सोचना गलत था. अब मुझे सिरदर्द, मुंह के छाले और पेट में दर्द है। कई चिकित्सकीय समस्याएं हैं लेकिन मैं धूम्रपान नहीं छोड़ सका। इस्लामाबाद में उपभोक्ता संरक्षण संगठन द नेट के प्रमुख नदीम इकबाल ने पाकिस्तान में धूम्रपान की मौजूदा स्थिति पर प्रकाश डालते हुए डीडब्ल्यू से कहा, 'धूम्रपान के बारे में चर्चा का विषय अब बदल गया है। अब यह समझने की जरूरत है कि छोड़ने के तरीके कितने खतरनाक हैं, धूम्रपान कर रहे हैं। एक प्रवृत्ति सर्वेक्षण में पाया गया कि स्कूलों में पढ़ने वाले लगभग ग्यारह प्रतिशत लड़के और लड़कियां धूम्रपान करने वाले थे। दस में से छह बच्चों ने तब कहा कि उन्होंने धूम्रपान छोड़ने की कोशिश की थी लेकिन असफल रहे थे। इसका कारण सरकार के स्तर पर धूम्रपान विरोधी होना नहीं है पाकिस्तान में बच्चों के लिए कार्यक्रम। द नेट के प्रमुख के अनुसार, सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में कुछ अच्छे क़दम उठाए हैं, जैसे कि अठारह वर्ष से कम उम्र के लोगों को सिगरेट की बिक्री पर प्रतिबंध लगाना। उन्हें बिना खुली सिगरेट नहीं बेची जा सकती। इसके अलावा, सिगरेट के किसी भी पैकेट में उससे अधिक सिगरेट नहीं होगी, और प्रत्येक पैकेट पर बड़ी चेतावनी वाली तस्वीरें भी छपी होती हैं हालांकि, नदीम इक़बाल ने सवाल किया, कौन अभी भी निश्चित रूप से कह सकता है कि इन उपायों ने किशोरों और नाबालिगों के बीच प्रभावी रूप से धूम्रपान को हतोत्साहित किया है? उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि पाकिस्तान में तंबाकू उत्पाद खरीदने की न्यूनतम आयु सीमा बढ़ाकर 21 वर्ष की जानी चाहिए। इस्लामाबाद स्थित गैर-सरकारी संगठन मुस्लिम मेल सोशल डेवलपमेंट ऑर्गनाइजेशन के कार्यकारी निदेशक सैयद कौसर अब्बास ने वैली डब्ल्यू के साथ एक साक्षात्कार में कहा कि धूम्रपान में नए रुझान पेश किए गए हैं। कभी-कभी वैपिंग, ई-सिगरेट और

बाक़ी पेज 11 पर

जिलहिज्जा का महीना

ज़िलहिज का महीना चार बरकत और हुरमत वाले महीनों में से एक है। इस मुबारक माह में नवाफिल रोज़े, तिलावत, कुरआन तस्बीह व तकबीर वगैरह आमाल का बड़ा सवाब है बिला खसूस पहला अशरा अज्रो सवाब के एतबार से बहुत फज़ीलत रखता है। बुख़ारी शरीफ में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ि॰ की रिवायत है कि नबी सल्ल॰ ने इरशाद फरमाया ''अल्लाह तआला को ज़िलहिज के इब्तदाई दस दिनों में नेक आमाल करना जिस क़द्र पसंद है, उतना किसी और वक़्त में आमाल का अजांम देना पसंद नहीं। (बुख़ारी शरीफ) और अकसर मुफस्सरीन ने कराम सरे वल फज्र की इब्तदाई आयत का मिस्दाक इन्हीं अय्याम को क़रार दिया है। गोया इन अय्याम की अज़मत की बिना पर कुरआन मजीद में इन की क़सम खाई है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर मुकम्मल 1431) और सैयदना हज़रत अबु हुरैरा रज़ि॰ से मरवी है कि नबी करीम सल्ल॰ ने फरमाया कि अल्लाह तआला को अशरये जिलहिज की इबादत सबसे ज़्यादा पसंद है और इन अय्याम में हर दिन का एक रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर और हर रात की इबादत शबे क़द्र की इबादत के बराबर सवाब रखती हैं। (त्रिमिजी शरीफ़ हदीस 758, सनन इब्ने माजा 1728, अल तरगीब व तरहीब मुकम्मल 271) और सैय्यदना अनस बिन मालक से रिवायत है कि पैग़म्बर सल्ल॰ ने इरशाद फरमाया कि अशरा ज़िलहिज में हर दिन का सवाब एक हज़ार दिनों के बराबर और यौम अरफा का सवाब दस हज़ार दिनों के बराबर है। (शोयबुल ईमान 3766, अलतरगीब व वल तरहीब 271) मजकूरा हादीस की रोशनी में उलेमा कराम ने लिखा है कि रमज़ानुल मुबारक के बाद सबसे अधिक फज़ीलत वाले दिन ज़िलहिज के पहले दस दिन है। लिहाज़ा इन अय्याम में खसूसियत के साथ इबादत व इताअत का अहतमाम करना चाहिये। ख़ासकर यौम अरफा के रोज़े का बड़ा अज्र व सवाब अहादीस में मनकूल है।

हज़रत अबू कतावा रज़ि॰ से मरवी है कि नबी करीम सल्ल॰ से यौमे अरफा के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप सल्ल॰ ने फरमाया ''यौम अरफा का रोज़ा गुज़रे हुये साल और आने वाले साल के गुनाहों के लिये कफ्फ़ारा है। (मुस्लिम शरीप 1162) अलतरग़ीब वलतरही व मुकम्मल 238 और एक रिवायत में हैं कि यौमे अरफा के रोज़े का सवाब एक हजार दिन के रोज़ों के बराबर है। (शोएबुल ईमान 3764 अलतरगीब वल तरहीब मुकम्मल 239) इसी तरह हदीस पाक में आता है कि जो शख़्स कुर्बानी का इरादा रखता है इसके लिये अफज़ल यह है कि ज़िलहिज का महीना शुरू होने के बाद से कुर्बानी तक बदन के बाल और नाखुन वग़ैरह न काटे। (मुस्लिम शरीफ किताबुल जहीत 2/160ण आला अलसनन 7/208)

तकबीर तशरीक ज़िलहिज की 9 तारीख़ (यौमे अरफा) की फज्र की नमाज़ से लेकर 13 ज़िलहिज की असर की नमाज़ तक हर फर्ज़ नमाज़ के बाद मुनफर्द, ईमाम मुकतदी, मर्द और औरत सब पर तकबीर तशरीक़ पढ़ना वाजिब है। (हिन्दय 100/152) तकबीर तशरीक़ हर फर्ज़ नमाज़ के बाद एक बार पढ़ी जायेगी। ये तकबीर मर्द ज़हरन पढ़ेंगे और औरतें आहिस्ता आवाज़ से पढ़ेंगी। (दुर्रमुख़्तार जकरिया 62/3) मसबूक शख़्स अपना सलाम फेरने के बाद तकबीर तशरीक पढ़ेगा (हिन्दयत: 152/1)।

कुर्बानी का असल वक्त 10 ज़िलहिज की सुबह सादिक़ से शुरू होकर 121 ज़िलाहिज के सूरज छिपने तक रहता है। अलबत्ता जिस बड़ी आबादी में ईद की नमाज़ होती है, वहां ईदुल अज़्हा के बाद ही कुर्बानी दुरस्त होगी और जहां नमाज़े ईद जायज़ न हो जैसे छोटे गांव देहात तो वहां सुबह सादिक़ के फौरन बाद कुर्बानी दुरस्त है। अगर शहर में किसी जगह ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ ली जाये तो पूरे शहर वालों के लिये कुर्बानी करना दुरुस्त हो जाता है इसमें ईदगाह या जामा मस्जिद आदि की नमाज़ पर सेहत का मदार नहीं है।

नमाज़ ईदुल अज़्हा दो रकाअत वाजिब है। यह नमाज़ 6 ज़ायद तकबीरात के साथ अदा की जाती है। सूरज निकलने के बाद ज़रा बुलंद हो जाये तो नमाज़े ईद का वक़्त शुरू होता है। ईदुल अज़्हा की नमाज़ में जल्दी करना अफज़ल व मुस्तहब है। (फतावा आलमगीरी)।

नमाज़ ईदुल अज़्हा का तरीक़ा यह है कि तकबीर तहरीमा कह कर हाथ बांध ले, सना पढ़े इसके बाद दोनों हाथ उठाते हुये मामूली फसल से तीन बार तकबीर कहें, पहली दो तकबीरों के बाद हाथ छोड़ते रहे और तीसरी तकबीर के बाद हाथ बांध ले, इसके बाद फातिहा और सूरत मिलाये, फिर रुकुअ सज्दा करके रकात पूरी कर ले। दूसरी रकाअत में पहले फातिहा व सूरत पढ़ने के बाद रुकुअ में न जाये बल्कि तीन बार हाथ उठाकर तीन तकबीरें कहें और दर्मियान में हाथ न बांधे इसके बाद हाथ उठाये बिना रुकु में चले जायें और बाकी नमाज़ हस्ब मामूल पूरी करे। (जलबी अलकबीर 567)।

नमाज़ ईदुल अज़्हा के बाद खुतबा सुनना सुन्नत है। (जवाहरुल फ़िकहा 1/447) । ईदुल अज़्हा के दिन ये चीज़ें मसनून है। सुबह को जल्दी उठना, गुस्ल करना, मिस्वाक करना, साफ उम्दा कपड़े पहनना, ईद की नमाज़ से पहले कुछ न खाना, ईदगाह जाते हुये बाआवाज़े बुलंद तकबीर तशरीक़ पढ़ना।

(जवाहरुल फिक़हा 1/447)

कुर्बानी एक अहम इबादत है और शआयरे इस्लाम में दाख़िल है हिम्मत रखने के बावजूद कुर्बानी न करने पर सख़्त वईद है। नबी सल्ल॰ ने फरमाया कि ''जो आदमी कुर्बानी की गुंजाइश रखने के बावजूद कुर्बानी न करे वह हमारी ईदगाह में न आये। (खाहुल हाकिम 3/389) अलतरग़ीब वल तरहीब मुकम्मल, 256) कुर्बानी के अय्याम में दीगर इबादात के मुक़ाबले कुर्बानी का अमल अल्लाह तआला को बहुत पसंद है। चुनांचे उम्मुल मोमिनीन हज़रत सैयदना आयशा सिद्दिका रज़ि॰ से मरवी है कि नबी अकबर सल्ल॰ ने इरशाद फरमाया कि ''कुर्बानी के दिन में कोई अमल अल्लाह तआला को खून बहाने से ज़्यादा पसंद नहीं और ये कुर्बानी का जानवर क़यामत के मैदान में अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ आयेगा और कुर्बानी में बहाया जाने वाला खून ज़मीन पर गिरने से पहले अल्लाह तआला के दरबार में क़बूल हो जाता है। इसलिये खुशदिली से कुर्बानी किया करो। (सुनन इब्ने माज़ा 3/26, त्रिमीजी शरीफ 1493 अल तरग़ीब व अल तरहीब मुकम्मल 255)।

विदित हो कि अय्याम कुर्बानी में जानवरों का ज़िब्ह करना लाज़िम है। जानवरों की कीमत के सदक़े से काम नहीं चल सकता और इंसान वसअत के बावजूद कुर्बानी नहीं करेगा वह सख़्त गुनाहगार होगा क्योंकि वह वाजिब का तर्क करने वाला है। (हिन्दया 5/293 बदाये अल सनाय ज़करिया 4/200) आज कल बआज मॉडर्न विचारों वाले लोग कुर्बानी के बजाये सदक़ा करने पर ज़ोर देते हैं कोई कहता है कि इस पैसे से ग़रीब बच्चियों की शादी करा दें तो अच्छा है कोई मशवरा देता है कि ये पैसा ग़रीब तलबा की फीस में लगा दिया जाये आदि तो इनकी ये बात शरीअत के ख़िलाफ़ है और हरगिज़ तवज्जोह के लायक़ नहीं।

कुर्बानी हर इस शख़्स पर वाजिब है जिसमें ये शर्ते पाई जाये (1) आज़द होना, (2) मुसलमान होना, (3) अय्यामे कुर्बानी में मुकीम होना, (4) अय्यामे कुर्बानी में बकदरे निसाब माल (रुपया, पैसा, चांदी या माल तिजारत या ज़रूरत से ज़्यादा साज़-सामान या रहने के मकान से ज़्यादा कोई मकान आदि) का मालिक होना (मजमा अलनहर 4/155, दुर्रे मुख़्तार अलशामी ज़करिया 9/452 कराची, 6/312) वाज़ेह हो कि कुर्बानी व सदक़ये फित्र के वजूद में माल पर साल गुज़रना शर्त नहीं है।

कुर्बानी के अय्याम तीन है यानि 10, 11 और 12वीं ज़िलहिज इससे पहले या बाद में कुर्बानी मोतबर नहीं है (हिन्दया 5/295 बदाय सनाय ज़करिया 4/198)

कुर्बानी का असल वक्त 10 ज़िलहिज की सुबह सादिक़ से शुरू होकर 121 ज़िलाहिज के सूरज छिपने तक रहता है। अलबत्ता जिस बड़ी आबादी में ईद की नमाज़ होती है, वहां ईदुल अज़्हा के बाद ही कुर्बानी दुरस्त होगी और जहां नमाज़े ईद जायज़ न हो जैसे छोटे गांव देहात तो वहां सुबह सादिक़ के फौरन बाद कुर्बानी दुरस्त है। (दुर्रे मुख़्तार 9/460, कराची 6/318, बदाये लसनाये ज़करिया 4/198)

अगर शहर में किसी जगह ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ ली जाये तो पूरे शहर वालों के लिये कुर्बानी करना दुरुस्त हो जाता है इसमें ईदगाह या जामा मस्जिद आदि की नमाज़ पर सेहत का मदार नहीं है। (दुर्रे मुख़्तार 9/460, कराची 6/318)

सिर्फ नीचे दिये जानवरों की कुर्बानी दुरुस्त है। (1) बकरी जिसके ज़मन में पालतू भेड़, दुंबा और मेढ़े आदि भी शामिल है। (2) ऊंट, (3) गाय, (जिसके जमन में भैंस और कट्रा भी शामिल है। (हिन्दया 5/297) दुर्रे मुख़्तार मय अलशामी ज़करिया 9/466)

भैंस भी गाय की क़िस्म का एक जानवर है इसलिये इसकी कुर्बानी में कोई हर्ज नहीं। (शामी ज़करिया, 9/466, कराची 6/322)

कुर्बानी के जानवरों की उमरे क्या हों इस बारे में तफ्सील दर्ज जैल है (1) बकरा बकरी एक साल का पूरा हो चुका हो, (2) भेड़ अगर सेहमंद हो, और देखने में बड़ा लगता हो तो 6 माह का भी काफी है। (3) गाय भैंस दो साल के मुकम्मल हो चुके हों, (4) ऊंट पांच साल का मुकम्मल हो चुका हो (दुर्रे मुख़्तार मय अलशामी ज़करिया 9/466)।

ऊंट, गाय, आदि जानवरों में 7 हिस्सेदार शरीक़ हो सकते हैं, जब कि बकरा सिर्फ एक ही हिस्से की तरफ से काफी होता है।

(हिन्दयत 5/297)

ख़ास ख़बरें

जापान में गोताखोरी कर रहे 7 लापता

टोक्यो : जापान के दक्षिणी प्रांत ओकिनावा में गोताखोरी करने के दौरान सात लोग लापता हो गये। यह हादसा द्वीप के दक्षिण में स्थित इटोमन शहर के समीप प्रवाल भित्तियों के उत्तर में हुई। पांच गोताखोर और दो समुद्री धाराओं में ड्रिफ्ट डाइविंग कर रहे थे। जापान की समुद्री सुरक्षा बल ने घटनास्थल पर एक हेलीकॉप्टर भेजा है और लापता लोगों की तलाश की जा रही है।

भारतीय वागीर श्रीलंका पहुंची

कोलंबो: भारतीय नौसेना की कलवारी श्रेणी की नई स्वदेश निर्मित पनडुब्बी 'वागीर' ने श्रीलंका की अपनी चार दिवसीय यात्रा की। यह यात्रा ऐसे समय आरंभ हुई जब वहां पाकिस्तानी नौसेना का एक पोत भी मौजूद था। श्रीलंकाई नौसेना ने कहा कि पाक नौसेना का जहाज 'टीपू सुल्तान' भी दो दिवसीय यात्रा पर कोलंबो बंदरगाह पहुंच गया था। 'टीपू सुल्तान' को चालक दल के 168 लोग संचालित कर रहे हैं। भारतीय उच्चायोग ने कहा कि वागीर की परिचालन यात्रा 'ग्लोबल ओशन रिंग' थीम के तहत अंतरराष्ट्रीय स के नौवें संस्करण को मनाने के लिए है। पनडुब्बी के कमांडिंग अधिकारी कमांडर दिवाकर. एस पश्चिमी नौसेना क्षेत्र के कमांडर रियर एडमिरल सुरेश डी सिल्वा से मुलाकात करेंगे। बाद में आगंतुक और स्कूल के बच्चे इस पनडुब्बी को देखने आ सकेंगे।

डिलीवरी ब्वॉय को कार ने घसीटा

बेंगलुरु : यहां दिल्ली के कंझावला जैसा मामला सामने आया है। यहां के राजराजेश्वरी नगर मैट्रो स्टेशन के पास एक कार ने बाइक को टक्कर मार दी और उसे 100 मीटर तक घसीटते हुए ले गई, जिससे एक डिलीवरी ब्वॉय की मौत हो गई। मृतक की पहचान मैसूर जिले के एच.डी. कोटे के निवासी प्रसन्ना कुमार के रूप में हुई है। वह एक फूड डिलीवरी एप के लिए डिलीवरी ब्वॉय के रूप में काम करता था। टक्कर मारने वाले विनायक नामक शख्स को लोगों ने जमकर पीटा और फिर पुलिस के हवाले कर दिया।

अमरीका : गोलीबारी में छह की मौत

पेनसिल्वेनिया : अमरीका में सप्ताहांत में गोलीबारी की घटनाओं में कम से कम छह लोग मारे गए और बड़ी संख्या में लोग घायल हो गए। हिंसा और गोलीबारी की ताजा घटनाएं शिकागो, वाशिंगटन, मध्य पेंसिल्वेनिया, सेंट लुइस, सदर्न कैलिफोर्निया और बाल्टीमोर में हुई। शिकागो में एक कार्यक्रम के लिए इकट्ठा हुए लोगों पर गोलियां चलाई गई जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई।

इस्लामियात

हुरमत वाला महीना ज़िलहिज

अल्लाह तबारक व तआला ही ने ज़मीन व आसमान को पैदा फरमाया है। सूरज व चाँद का निकलना-छुपना तय किया है और दिन-हफ्ता-महीना, और साल बनाए हैं और साल में बारह महीने मुक़र्रर किए हैं और इनमें से चार महीनों (ज़िल क़ायदा, जिल हिज, मोहर्रम, और रजब) को गौरव-सम्मान वाला क़रार दिया है अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में इरशाद फरमाया है कि ''जब से अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को पैदा फरमाया है तब ही से अल्लाह तआला के यहां साल के महीनों की संख्या बारह हैं इनमें से चार महीने हुरमत वाले हैं। (तौबा /36)

इन चार सम्मानीय महीनों में एक अत्याधिक अज़मत हुरमत वाला महीना ज़िलहिज है और यह पूरा का पूरा महीना सराया-ख़ैर व बा-बरकत का महीना है लेकिन इस मुबारक महीने के पहले दस दिनों की क़द्र व कीमत बहुत ही अधिक है क़ुरआन मजीद व हदीस में इन दस दिनों की बड़ी फज़ीलत बयान हुई है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद की सूरह फज्र (आयत 1-2) सूरह बकरह (आयत-203) और सूरह हज (आयत-28) में निहायत ही अहतमाम व ताकीद के साथ इन दस दिनों की फजीलत व अहमियत बयान फरमायी है इसी तरह हदीस मुबारका की सारी बड़ी किताबों में इन दस दिनों की ख़ूब अधिक फज़ीलत बयान हुई है एक हदीस शरीफ में आप (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया है कि ''अल्लाह तआला के निकट इन दस दिनों में क्या हुआ हर नेक अमल इतना पसंदीदा और महबूब है कि साल के दूसरे दिनों में की जाने वाली नेकी इतनी पसंदीदा नहीं है। (बुख़ारी) इन्हीं दिनों में एक दिन अरफा का दिन (9 जिल हज) है। यह दिन तमाम दिनों में सबसे अफज़ल व बरतर दिन है, हज़रत अनस (रज़ि०) से मन्कूल असर में है कि ''हज़रात सहाबा कराम (रज़ि०) के बीच यह बात मशहूर व मारूफ थी कि इन दस दिनों में हर दिन (फज़ीलत व बुज़ुर्गी के लिहाज़ से) एक हज़ार दिनों के बराबर है और अरफा का दिन दस हज़ार दिनों के बराबर है। (बेहकी) और अरफा का दिन अल्लाह तआला की विशेष रहमत-मग़फ़रत का दिन है, हदीस में है कि जिसने अपनी ज़बान की, अपने कानों की और अपनी आंखों की अरफा के दिन हिफाज़त की तो उसके गुनाह बख़्श दिए जाएंगे।

इसी तरह अरफा का दिन जहन्नुम से रिहायी व निजात का दिन है एक हदीस में है कि ''अहले जहन्नुम अरफा के दिन से ज़्यादा और किसी दिन आज़ाद नहीं किए जाते, बिना शक इस दिन अल्लाह तबारक तआला (अपनी रहमत व मग़फ़रत के साथ अपने बन्दों पर) विशेष तौबा फरमाते हैं और फरिश्तों के सामने अपने बंदों पर फख़्र करते हैं और कहते हैं यह बन्दे क्या चाहते हैं'' (मुस्लिम) इसी तरह इन दस दिनों का आख़िरी दिन ''यौम ल नहर'' (कुर्बानी का दिन) है यह दसवां साल के सारे दिनों में सबसे

इसी तरह अरफा का दिन जहन्नुम से रिहायी व निजात का दिन है एक हदीस में है कि ''अहले जहन्नुम अरफा के दिन से ज़्यादा और किसी दिन आज़ाद नहीं किए जाते, बिना शक इस दिन अल्लाह तबारक तआला (अपनी रहमत व मग़फ़रत के साथ अपने बन्दों पर) विशेष तौबा फरमाते हैं और फरिश्तों के सामने अपने बंदों पर फख़्र करते हैं और कहते हैं यह बन्दे क्या चाहते हैं''

अधिक फज़ीलत व अज़मत वाला दिन है आप (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया है कि अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे अज़मत वाला दिन यौम अल नहर (दस ज़िल हिज क़ुर्बानी वाला दिन है) फिर इसके बाद यौम अल कर (11 ज़िलहिज यानि मीना में ठहरने वाला) दिन है। (अबू दाऊद)

इन दस दिनों की इस महत्ता और फज़ीलत का असल कारण यह है कि अल्लाह तआला की विशेष करम-फज़ल की बिना पर इन दिनों में तमाम अहम इबादतें (नमाज़, रोज़ा, सदक़ा, व खैरात और हज व उमरा) जमा हो गयीं हैं और सिफ इन्हीं दस दिनों में इस्लाम के एक अहम रुक्न ''हज'' के आमाल की अदायगी संभव है। इस फज़ीलत व अहमियत का तक़ाज़ा यह है कि इन दस दिनों में अधिक से अधिक नेक आमाल किए जाएं अल्लाह तआला की रज़ा व खुशनूदी हासिल की जाए और आख़िरत बनायी व संवारी जाए यही मशयत इलाही है और यही हज़रत मोहम्मद (सल्ल०) की मर्ज़ी है। आप (सल्ल०) ने एक हदीस में इरशाद फरमाया है कि ज़िलहिज के शुरुआती दस दिन साल के अफज़ल तरीन दिन हैं, इनमें इबादत करना अल्लाह तआला को बहुत महबूब व पसंद है।(बुखारी)

एक दूसरी हदीस में है कि इन दस दिनों में की जाने वाली इबादत का सवाब शबे क़द्र में की जाने वाली इबादत के बराबर है। आप (सल्ल०) ने इरशाद फरमाया है कि इन दस रातों में से एक रात इबादत का सवाब शबे क़द्र की इबादत के बराबर है। (तिरमिजी) इस बड़ी तरग़ीब के साथ-साथ आठवीं, नौंवी, दसवीं, ज़िलहिज में नेक आमाल करने की विशेष तरग़ीब भी दी गयी है, एक हदीस में इन तीन रातों में इबादत करने वालों को जन्नत की बशारत दी गयी है। (तरग़ीब)! और दसवीं रात की इबादत पर यह अहम खुशख़बरी सुनायी गयी है कि ''जो इस रात में इबादत करेगा तो उसका दिल उस दिन भी ज़िन्दा रहेगा जब लोगों के दिलों पर मुर्दगी छा जाएगी। यानि क़यामत के दिन (इब्ने माज़ा) इस तरग़ीब व ताकीद का तक़ाज़ा यह है कि हम तमाम अहले ईमान इन दस दिनों में ज़्यादा से ज़्यादा नेक आमाल करने का अहतमाम करें क्योंकि इन दस दिनों में नेक आमाल करना अल्लाह तआला को बहुत पसंद है और इनका अज्र व सवाब भी बहुत अधिक है।❑❑

नूर-ए-क़ुरआन

सूरा बकरह नं. 02

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

फिर यदि वे रुक जायें तो निःसन्देह अल्लाह बड़ा क्षमाशील, बड़ा कृपालु है।

अर्थात इन सब बातों के होते हुए यदि जब भी मुसलमान हो जायें, और अल्लाह का साझी न बनायें तो क्षमा याचना स्वीकार है।

और ऐसे लोगों से सड़ों यहां तक कि सिर्फ (धरती पर बाकी न रहे और अल्लाह ही का आदेश रहे, फिर यदि वे लोग रुक जायें तो अत्याचारियों के लिया किसी पर सखती नहीं हुआ करती।

अर्थात इनकारियों से युद्ध इसी कारण है कि अत्याचार समाप्त हो और किसी को सच्चे धर्म से भ्रमित न कर सके, और केवल अल्लाह ही का आदेश चले। इसलिए जब अल्लाह का साझी बनाने से रुक जायें, तो उन पर जब कोई आक्रमण अधिक कठोरता मत करो, जो बुराई से रुक गये वे लोग अब अत्याचारी नहीं रहे, जब तुम भी जुल्म मत करो, हाँ जो षडयन्त्र करते है उनका वध कर दो।

बड़ाई वाला महीना बढ़ाई वाले महीने का बदला है और सम्मान रखने में बदला है फिर जिसने तुम पर जुल्म किया तो तुम भी उसको जुल्म की सज़ा दो, जैसा उसने तुम पर जुल्म किया और अल्लाह से डरते रहो और जान सो अल्लाह डरने वालों के साथ है।

सम्मान का महीना अर्थात् जीकादा, जिसमें उमरे की कज़ा करने जा रहे हो बदला है उस सम्मान के महीने अर्थात् जीकादा का, कि पिछले वर्ष इसी महीने में मक्के के इनकारियों ने तुमको उमरे से रोक दिया था और मक्के में जाने न दिया था। जब तुम प्रसन्नतापूर्वक उनसे बदला लो, क्योंकि सम्मान अर्थात् अदब करने में तो समानता है। अर्थात् अगर कोई इनकारी सम्मान के महीने का सम्मान करे और इस महीने में तुमसे युद्ध न करे तो तुम भी ऐसा ही करो। पिछले वर्ष मक्के वाले जो तुम पर जुल्म कर चुके, उन्होंने न सम्मान वाले महीने का कुछ विचार किया, न मक्के का सत्कार किया और न इस बात का विचार किया कि तुम अहराम बांधकर अल्लाह के घर की ओर जाये हो। परन्तु तुम ने इस पर भी धैर्य रखा। यदि इस बार भी हर प्रकार के सम्मान से आँखें बन्द करके बुद्ध के लिए खड़े हो जायें तो तुम भी किसी सम्मान का विचार किए बिना अगली पिछली सब कमी पूरी कर लो। परन्तु जो करो अल्लाह के डर से करो, उसके आदेश के विपरीत कदापि कुछ न करो और याद रखो कि अल्लाह, निःसन्देह परहेज़गारों और अच्छे लोगों का सहायक है।

और अस्लाह के रास्ते में खर्च करो और अपनी जान को अपने हाथों विनाश में न डालो।

तात्पर्य यह है कि अल्लाह के आज्ञा पालन अर्थात् जिहाद आदि में अपने माल को ख़र्च करो और अपने जीवन को आपत्ति में मत साओ अर्थात् जिहाद को छोड़ बैठो या अपने माल को जिहाद में ख़र्च न करो। इससे तुम कमजोर और तुम्हारे दुश्मन हो जायेंगे।

और नेकी करो निःसन्देह अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है।

और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो। हज के साथ जिहाद का वर्णन जो उचित था किया क्योंकि दोनों में कष्ट भी बहुत होता है और धन भी ख़र्च करना पड़ता है। जब फिर हम और उमरा के आदेशों का वर्णन किया जाता है।

रज़ा-ए-इलाही के हुसूल मे। बिइस्मिही तआला सुन्नतत-ए-इब्राहीमी की याद में

''ये तुम्हारे वालिद इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है।''

(रवाहु मस्नद-ए-अहमद इब्न-ए-हम्बल)

हर साल की तरह इस साल भी
जमीअत उलमा-ए-जाजपुर उडीशा की ज़ेरे निगरानी

इज्तिमाई क़ुर्बानी का नज़्म किया गया है

बड़ा जानवर : फ़ी हिस्सा 1200/-
छोटा जानवर : दरमियाना 6000/-

•गोश्त ग़रीब मुस्तहक़ लोगों में तक़सीम कर दिया जाता है।
•चमड़े के ज़रिए दीनी तलबा की मदद होजाती है

लिहाज़ा आईए अपनी और अपने मरहूमीन और अपनी औलाद की जानिब से क़ुर्बानी में हिस्सा लेकर दोहरे अज्र के मुस्तहिक़ बनें।

राबिता करें : 9437208465, 9937608786

अलमुश्तहिर:- (हज़रत मौलाना) मुहम्मद अख़तर ज़की क़ासमी (साहब)
सदर जमीअत ओलमा जाजपुर व मोहतमिम मदरसा मिशकातुल उलूम रजिस्टर्ड, बंझारपुर, जाजपुर, उडीशा

नए संसद भवन और उसकी कुर्सियों के मायने

नया संसद् भवन क्या है? इसे इतनी जल्दी में बनवाने, खड़ा करने का क्या मतलब? सही में वास्तु का कोई मामला था या अंग्रेजों की बेड़ियों से मुक्त होने का कोई उपक्रम ? कोई लम्बा-चौड़ा गणित नहीं है। तमाम सरकारें जो कुछ भी करती हैं, वे आगे भी सत्ता में बने रहने के लिए करती हैं और तमाम राजनीतिक पार्टियां चुनाव में जीत के लिए गणित भिड़ाती रहती हैं। नए संसद भवन के निर्माण में भी जीत के गणित हैं।

सत्ता में बने के उपाय हैं। दरअसल, नए संसद भवन के तहत निचले सदन यानी लोकसभा में 543 (2) की बजाय 888 कुर्सियां हैं और राज्यसभा में 250 की बजाय 384 कुर्सियां हैं। साधारण सी बात है- जब कोई नया निर्माण होता है तो के हिसाब से ही होता है। तय है कि आने वाले वर्षों में लोकसभा और राज्यसभा की सीटों में वृद्धि होना अत्यावश्यक है।

लेकिन समझने की बात ये है कि सीटों की वृद्धि से आखिर सर्वाधिक लाभ किस राजनीतिक दल को हो सकता है और क्यों?

दरअसल, देश जब आज़ाद हुआ, उसके बाद पहले चुनावों में लोकसभा की 499 में से 489 सीटों पर चुनाव होते थे, बाकी दस सीटों पर मनोनयन होता था। 1976 में लोकसभा सीटों के बढ़ने की बारी आई यानी परिसीमन की। 1971 की जनगणना को आधार मानकर सीटों का निर्धारण किया गया। तब देश की जनसंख्या लगभग 54 करोड़ थी। फॉर्मूला बनाया गया कि हर दस लाख लोगों पर एक लोकसभा सीट होनी चाहिए। इसी आधार पर लोकसभा की 543 सीटें तय हो गईं। आज भी इतनी ही हैं। दो मनोनीत सदस्यों को मिलाकर 545 होती हैं।

ख़ैर, अब आते हैं असल मुद्दे पर। 1971 से अब तक देश की जनसंख्या लगभग ढाई गुना बढ़ चुकी है। लेकिन लोकसभा सीटें उतनी ही हैं जितनी 1976 में तय की गई थीं। अब यहां यह जानना ज़रूरी है कि ऐसा क्यों हुआ ? जनसंख्या में अपार वृद्धि के बावजूद लोकसभा सीटों में किसी सरकार ने वृद्धि क्यों नहीं की?

दरअसल, सत्तर के दशक में देश में परिवार नियोजन कार्यक्रम ज़ोरों से चलाया गया था। बाकायदा शिक्षकों, पटवारियों तक को टारगेट दिए गए थे। भाई लोगों ने इंक्रीमेंट के चक्कर में ऐसे-ऐसे लोगों की भी नसबंदी करवा दी थी, जिनके बच्चे ही नहीं थे। कुछ ऐसे भी थे, जिनकी शादी तक नहीं हुई थी। कई मामलों में शिक्षकों, पटवारियों, ग्रामसेवकों ने तो अपनी नौकरी बचा ली, लेकिन लोगों का जीवन नीरस कर दिया, बर्बाद कर दिया।

ख़ैर, कुल मिलाकर इस परिवार नियोजन कार्यक्रम का ज्यादा असर या कहें कि अच्छा इम्प्लीमेंट दक्षिण के राज्यों में हुआ। लेकिन हिंदी भाषी आठ राज्यों में इस कार्यक्रम के तहत घपले-घोटाले ज्यादा हुए और सही मायने में असर कम हुआ। दक्षिण में तब मौजूद राजनीतिक दलों ने आवाज उठाई कि अगर जनसंख्या के आधार पर ही लोकसभा सीटों का निर्धारण होता रहा तो हम उत्तर और मध्य भारत की अपेक्षा बहुत छोटे रह जाएंगे। यानी दक्षिण भारत में लोकसभा सीटें शेष भारत की अपेक्षा बहुत कम रह जाएंगी। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दक्षिण के राज्यों की इस समस्या को समझा और संविधान संशोधन के जरिए 2026 तक लोकसभा सीटों के परिसीमन पर रोक लगा दी। इसका उद्देश्य यह था कि कम से कम इतने समय में दक्षिणी राज्यों की जनसंख्या वृद्धि का प्रतिशत भी शेष भारत के समान हो जाएगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं।

अब अगर 2026 में परिसीमन होता है तो सीटों की वृद्धि सर्वाधिक हिंदी भाषी राज्यों में ही होनी है। भले ही आधार 2011 की जनगणना को ही क्यों न माना जाए। वैसे भी 2021 में जो जनगणना होनी थी वह अब तक नहीं हो सकी है। एक अनुमान है कि 2011 की जनगणना को आधार माना जाए तो भी दक्षिण के राज्यों की अपेक्षा हिंदी भाषी राज्यों में दो गुना सीटें बढ़ जाएंगी।माना है कि हिंदी भाषी राज्यों में सीटें बढ़ने का ज्यादा फायदा भारतीय जनता पार्टी को होने है। सब जानते हैं बजरंग बली वाला नारा कर्नाटक में भले ही न चला हो लेकिन हिंदी भाषी राज्यों में ज़रूर चलेगा।

कहा जा सकता है कि नए संसद भवन के निचले सदन में जो कुर्सियां बढ़ी हैं, भविष्य में उन पर ज्यादातर भाजपा सदस्य ही बैठे मिलें तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

अब विपक्षी दल नए संसद भवन के उद्घाटन का विरोध करके ही अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझते रहें तो भले समझें, लेकिन आख़िरकार उसका उद्देश्य उन्हें ज़रूर समझना चाहिए। हालांकि 2024 तक तो परिसीमन होना मुश्किल ही है, क्योंकि इसके पहले यह करतब किया भी जाता है तो इसकी प्रक्रिया बहुत लम्बी है, जो समय रहते पूरी नहीं हो पाएगी। बहरहाल, नई संसद से भाजपा वालों के चेहरे खिले हुए हैं और कम से कम 2026 तक तो खिले ही रहेंगे। ❑❑

डीटीयू के छात्रों ने बनाई डिलीवरी रोबोट कार, अमेरिका में करेंगे प्रदर्शित

दिल्ली टेक्नालाजिकल यूनिवर्सिटी के स्नातक छात्रों की टीम ने डिलीवरी रोबोट कार का निर्माण किया। यह चालक रहित वाहन कई मायनों में सुविधाजनक साबित होंगे, जिन्हें व्यवसायों से लेकर कृषि और स्वास्थ्य के क्षेत्रा में प्रयोग में लाया जा सकता है। डीटीयू के कंप्यूटर और मेकेनेकिल इंजीनियरिंग व इन्फारमेशन टेक्नालजी के छात्रों के समूहों द्वारा डिजाइन किए गए इस वाहन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता में प्रदर्शित करने की तैयारी की जा रही है। छात्रों के अनुसार, यह चालक रहित वाहन को कोरोना के दौरान विकसित किया गया था जो अब देश के तकनीक विकास में मददगार सिद्ध हो सकता है। छात्रों के समूह में अब्दुल, दक्ष गुप्ता, रजत चंद्रा, कौशल कुमार, लक्ष्य कुमार सिन्हा, हर्ष सैनी, आदित्य कुमार, उत्कर्ष दिवाकर व अन्य शामिल हैं। यह सभी पहले व दूसरे वर्ष के छात्रा हैं।

टीम के कप्तान लक्ष्य के नेतृत्व में सभी छात्रा आगामी दो से पांच जून को आयोजित होने वाले इंटेलिजेंट ग्राउंड व्हीकल प्रतियोगिता में भाग लेंगे। छात्रों ने बताया कि उनकी टीम के अनुसार यह प्रोजेक्ट मेड इन इंडिया के तौर पूरे देश का प्रतिनिधित्व करेगा जिसे सामान्य लोगों की पहुंच के लिए तैयार किया जा रहा है। सुरक्षा लाक सिस्टम के तहत कार्य करेगा वाहनः टीम के छात्रों ने बताया कि इस कार को वर्ष कोरोना काल में तैयार किया गया था और इस विशेष कार प्रोजेक्ट का नाम 'कर्म' रखा है। इसमें लगे जीपीएस से यह कार्य करता है और किसी भी लक्ष्य तक पहुंचने तक यह रास्ते में आने वाले किसी भी बाधा को डिटेक्ट करता है जिसकी जानकारी इसे आपरेट करने वाले को पता लगती है। इसमें रखी वस्तुओं को सुरक्षित करने को इसमें सुरक्षा लाक लगाया गया जिसे केवल प्राप्तकर्ता ही खोल सकता है। इसका प्रयोग सामानों की डिलीवरी के लिए आसानी से कर सकते हैं। होटल, रेस्टोरेंट के अलावा इसे अस्पताल में दवाओं को लाने- जाने के लिए भी कर सकते हैं। खेती से लेकर सीमा पर गश्त व कृषि : इसका उपयोग खेती के कार्यों में किया जा सकता है। इससे बीज बोना, निराई करना या कटाई हो सकती है। इससे मानव श्रम को कम करते हुए 'उत्पादकता में वृद्धि होती है। इसके अलावा इसकी मदद से उपयुक्त मात्राा में उर्वरक और कीटनाशकों का छिड़काव भी किया जा सकता है। रक्षा और सुरक्षारू जीपीएस सिस्टम की निगरानी में यह वाहन सेना के लिए मददगार हो सकता है। इसकी मदद से टोही और बम निरोधक अभियानों में मदद मिल सकती है। यह दुश्मन के खेमे में भी प्रवेश कर सकते हैं और सैनिकों के लिए जोखिम कम हो जाता है। इसका प्रयोग सीमा क्षेत्रा में गश्त और निरीक्षण कार्यों के लिए भी किया जाता है।

पर्यावरण निगरानी और संरक्षण : इसकी मदद से वन्यजीव ट्रैकिंग, वन निगरानी, वायु और जल गुणवत्ता आकलन में सहायता ली जा सकती है। यह बड़े क्षेत्रों को कवर कर उससे लगातार डेटा कैप्चर कर सकते हैं।

खनन और निर्माण : खनन कार्यों के लिए इस स्वचलित वाहन का उपयोग किया जा सकता है, जिससे मानव खनिकों को खतरनाक परिस्थितियों में काम करने की आवश्यकता नहीं होती है। निर्माण में वह साइट की तैयारी, सामग्री वितरण और यहां तक कि निर्माण जैसे कार्यों में भी सहायता कर सकते हैं।

आपदा में बचाव कार्य : प्राकृतिक आपदा या दुर्घटना की स्थिति में, पीड़ितों तक पहुंचाने वाले राहत कार्यों के तहत इस वाहन की मदद ले सकते हैं। इमारतों के ढहने आग लगने या खतरनाक परिस्थितियों में यह उन जगहों तक पहुंच सकता है जहाँ बचाव दल के लिए जाना दुर्गम या बहुत खतरनाक है।.

मौसम वैज्ञानिकों को छका रहे हैं मानसून के रहस्य

प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के कारण भारत में मानसून का पूर्वानुमान लगाना कठिन होता जा रहा है। तमाम नई तकनीकें भी इस बाधा को पूरी तरह से मिटाने में नाकाम हो रही हैं। इंडियन इंस्टिट्यूट आफ टेक्नोलाजी, हैदराबाद में केमिकल इंजीनियरिंग विभाग में शोध कर रहे प्रोफेसर कीर्ति साहू कहते हैं, भारत का मानसून रहस्यों से भरा है। अगर हम बारिश की भविष्यवाणी कर सकें तो यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात होगी। वे और उनके साथी वैज्ञानिक यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण कैसे मानसून की बारिश को बदल रहे हैं, जो देश की कृषि पर निर्भर अर्थव्यवस्था की जान है। मानसून भारत की अर्थव्यवस्था के लिए जीवनरेखा है। भारत को अपने खेतों, तालाबों और कुआं को जिंदा रखने के लिए जो पानी चाहिए उसका 70 फीसद मानसून से आता है। जलवायु बदलने वाले जीवाश्म ईंधनों को ऊर्जा के लिए जलाना और प्रदूषण मानसून को बदल रहा है। इसका असर खेती पर हुआ है और बारिश का पूर्वानुमान लगाना कठिन होता जा रहा है। जलवायु परिवर्तन दुनिया भर में कई तरह के चरम मौसम को जन्म दे रहा है। गीले इलाके और ज्यादा बारिश के कारण डूबने लग हैं। सूखे इलाके और ज्यादा पानी की कमी से हलकान हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र की 'इंटरगवर्नमेंटल पैनल फार क्लाइमेट चेंज' यानी आइपीसीसी ने ध्यान दिलाया है कि भले ही जलवायु परिवर्तन की वजह से एशिया में बारिश बढ़ सकती है लेकिन दक्षिण एशिया में 20वीं शताब्दी के दूसरे आधे हिस्से में मानसून कमज़ोर हुआ है। मानसून में इस बदलाव को 'एरोसाल' के बढ़ने से जोड़ा जा रहा है। यह एक रसायन है जिसके छोटे कण या बूंदें हवा में तैरती रहती हैं। यह इंसानी गतिविधियों के कारण बढ़ता है। जीवाश्म ईंधनों को जलाना, गाड़ियों से निकलने वाला धुआं और समुद्री नमक ये सब बातावरण में एरोसाल को बढ़ाते हैं। भारत लंबे समय से वायु प्रदूषण से जूझ रहा है जो बड़े शहरों में जब तक धुंध और धुएं की चादर फैला देते हैं।

मानसून का रहस्य सुलझा पाना वैज्ञानिकों के लिए भी मुश्किल 31 हो रहा है। हाल के वर्षों में भारत का मानसून छोटा मगर तीव्र होता गया है। मौसम का पूर्वानुमान बताने वाली निजी कंपनी स्काइमेट के प्रमुख मौसम विज्ञानी जीपी शर्मा का कहना है कि मानसून का यह रूप कुछ इलाकों में बाढ़ तो कहीं सूखे की स्थिति पैदा कर देता है। साल 2000 के बाद से अब तक छह बड़े सूखे की स्थिति आ चुकी है लेकिन पूर्वानुमान लगाने वाले उनके बारे में जानकारी नहीं दे सके। मानसून की सही भविष्यवाणी के लिए सरकार ने सेटेलाइट, सुपरकंप्यूटर और खास तरह के वेदर रडार स्टेशनों का नेटवर्क बनाया है। इसका नाम इंद्र रखा गया है। हालांकि इन सबके नतीजे में मामूली बेहतरी ही आई है। ब्राउन यूनिवर्सिटी में पृथ्वी, पर्यावरण और ग्रहीय विज्ञान के प्रोफेसर स्टीवन क्लेमेंस का कहना है कि जलवायु परिवर्तन और एरोसाल का असर भारत में मौसम का सही पूर्वानुमान लगाने में मुश्किल पैदा कर रहा है। उनका शोध मुख्य रूप से एशियाई और भारतीय मानसून पर केंद्रित है। भारत के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से जुड़े वैज्ञानिक माधवन राजीवन का कहना है कि हाल के वर्षों में मानसून की बारिश और ज्यादा अनियमित हुई है। उन्होंने कहा, बारिश थोड़े दिनों के लिए हो रही है लेकिन जब बारिश होती है तो भारी बारिश होती है।

मानसून के बादलों ने अपना रास्ता भी बदला है और अब वो देश के पूरे मध्य भाग को काट कर निकल जा रहे हैं। मानसून के दौर में कई राज्यों में बहुत ज़्यादा बारिश हो रही है जबकि दूसरे राज्य जहां कम बारिश होती थी, वहां इसकी और कमी हो जा रही है। आइआइटी, दिल्ली में असिस्टेंट प्रोफेसर अंशु ओगरा का कहना है, बारिश आई है, लेकिन भारी बरसात के रूप में इसका मतलब है कि पौधों के पास उन्हें अशोषित करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। फूल को फल बनने का मौका नहीं मिल पा रहा है तो ऐसे में आपको फसल का नुकसान होगा। मौसम का बेहतर पूर्वानुमान अधिकारियों को चरम मौसम की तैयारी में मदद दे सकता है।

खेल जगत

फुटबॉल का शक्ति पुंज बनना चाहता है सऊदी अरब

दुनिया के दिग्गज़ फुटबाल खिलाड़ी क्रिस्टियानो रोनाल्डो को अपने देश के क्लब अल नासर से जोड़ने के बाद सऊदी अरब अब लियोनल मेसी और करीम बेंजेमा सहित दुनिया के 20 प्रमुख खिलाड़ियों को अपने देश के क्लबों से जोड़कर इस खेल का एक बड़ा केंद्र बनना चाहता है। दरअसल सऊदी अरब दुनिया के बेहतरीन फुटबाल खिलाड़ियों को यूरोपीय क्लबों से मुक्त कराकर अपने देश की क्लबों से जोड़कर फुटबाल के माध्यम से पूरी दुनिया को आकर्षित करने की योजना पर काम कर रहा है। इसके लिए उसने आठ हजार करोड़ से ज़्यादा का बजट रखा है।

सऊदी अरब ही नहीं कतर व संयुक्त अरब अमीरात भी अपने देश में फुटबाल के विकास के लिए पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात व कतर जैसे. देशों ने अथाह कमाई के जरिए यूरोपीय फुटबाल क्लबों को खरीदने का सिलसिला शुरू किया और दुनिया के नामी क्लब मैनचेस्टर सिटी, न्यूकैसल यूनाइटेड व पीएसजी को खरीदने में पैसों की कमी नहीं रखी। इन देशों के पैसे से पीएसजी, मैनचेस्टर सिटी और न्यूकैसल यूनाइटेड जैसे क्लब वित्तीय संकट से बाहर निकल आए हैं और यूरोपीय फुटबाल सर्किट में उनकी स्थिति बेहतर हुई है। संयुक्त अरब अमीरात के स्वामित्व वाली मैनचेस्टर सिटी और कतर के स्वामित्व वाली पीएसजी दोनों ने बीते एक दशक में 12 से अधिक खिताब जीते हैं। मैनचेस्टर सिटी ने तो इस साल दो प्रमुख खिताब प्रीमियर लीग व एफए कप में शानदार जीत दर्ज की है।

सऊदी अरब का एक और सबसे बड़ा मकसद 2030 के विश्व कप की मेजबानी को हासिल करना है। सुनने में आया है कि इसके लिए वह मिश्र और ग्रीस को अपने साथ करने के लिए बड़ा सौदा कर चुका है। इसके तहत वह इन देशों के साथ संयुक्त मेजबानी के बदले स्टेडियम के निर्माण में आर्थिक सहयोग देगा, लेकिन इसके लिए शर्त यह भी रखी है कि यदि मेजबानी मिलती है तो तीन चौथाई मैच वह सऊदी में रखेगा। इसका सीधा अर्थ है कि सऊदी अरब फुटबाल के इस बड़े आयोजन और दुनिया के दिग्गज खिलाड़ियों को यूरोप से अपने यहां लाकर इस खेल से निवेशकों को आकर्षित कर आय का खज़ाना खोलना चाहता है। सऊदी अरब, ग्रीस और मिस्र के साथ मिलकर इसलिए संयुक्त बोली लगा रहा है ताकि फीफा को टूर्नामेंट के आयोजन में भौगोलिक संतुलन का प्रस्ताव पेश कर सके। फुटबाल विश्व कप में सऊदी अरब की दिलचस्पी का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि फीफा विश्व कप 2022 में सऊदी अरब ने उलटफेर करते हुए अर्जेंटीना के ख़िलाफ शानदार जीत हासिल की। हालांकि, कतर ने 2022 फीफा वर्ल्ड कप की मेजबानी की थी। ऐसे में सऊदी अरब की बोली सफल होने की संभावना बहुत ही कम है। सऊदी अरब के मुख्य प्रतिद्वंद्वियों में यूरोप से स्पेन, पुर्तगाल और यूक्रेन की संयुक्त बोली और दक्षिण अमेरिका से अर्जेंटीना, उरुग्वे, पैराग्वे और चिली की बोली शामिल है। दरअसल, फुटबाल विश्व कप की मेजबानी का निर्णय पूरे फीफा कांग्रेस के सदस्यों की पब्लिक वोटिंग से की जाती है। फीफा कांग्रेस में दुनिया भर के 200 से अधिक सदस्य हैं।

ऐसे में अगर मिस्र, ग्रीस और सऊदी निवेश से आकर्षित अफ्रीकी देश सऊदी अरब का समर्थन कर सकते हैं। इसके अलावा अगर सऊदी अरब एशियाई देशों से भी समर्थन लेने में सफल हो जाता है, तो उसके पास विश्व कप की मेजबानी जीतने का एक अच्छा मौका होगा। ऐसी उम्मीद है कि ग्रीस कुछ यूरोपीय वोटों को साधने में सफल हो सकता है।

कुल मिलाकर सऊदी अरब के साथ अन्य अरब देश अपने तेल के खजाने से मिलने वाली अपार धनसंपदा पर निकट भविष्य में दिख रहे संकट को देखते हुए आय के अन्य विकल्प के तौर पर फुटबाल में बड़े निवेश को तरजीह दे रहे हैं और दुनिया की नामी टीमों और खिलाड़ियों पर पैसा बहाने में कोई कमी नहीं रख रहे हैं। इससे उनके लिए आर्थिक संकट खड़ा ना हो, साथ ही फुटबाल के गढ़ रहे यूरोप को पीछे करते हुए अरब देश फुटबाल का बड़ा केंद्र बन जाएं और पूरी दुनिया से निवेशक अपना पैसा लगाने को आतुर हों। इसीलिए सऊदी अरब भी बड़े खिलाड़ियों को अपने क्लबों से जोड़ने के लिए खूब पैसा देने को तैयार है। यदि 2030 विश्व कप की मेजबानी मिल गई तो कहने ही क्या है। लेकिन यह सपना पूरा होना मुश्किल है। ❑❑

रेजोआना हीना : लंबी दौड़ की विश्व प्रतियोगिताओं में भारत की नई उम्मीद

दक्षिण कोरिया के येचियोन में चल रह एशियाई अंडर-20 एथलेटिक्स चौंपियनशिप में भारत के कई खिलाड़ियों ने द कमाल दिखाया। इनमें रेजोआना हीना मलिक ने महिला 400 मीटर रेस में स्वर्ण पदक जीतकर लंबी दौड़ की आगामी विश्व प्रतियोगिताओं में भारत के लिए उम्मीद जगाई है। हीना ने 53.31 सेकेंड में रेस पूरी कर स्वर्ण पदक जीता जो उनके व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 53.22 सेकेंड के समय से थोड़ा अधिक रहा। उन्होंने अप्रैल में ताशकंद में हुई एशियाई अंडर-18 एथलेटिक्स चौंपियनशिप में भी स्वर्ण पदक जीता था। हीना कहती हैं, 'प्रक्रिया पर भरोसा करें और खुद पर विश्वास करें।' पश्चिम बंगाल के नदिया जिले की 16 वर्षीय इस लड़की ने एथलेटिक्स में खुद को फास्ट ट्रैक पर रखा है। हीना ने नेशनल ओपन में 400 मीटर में सनसनीखेज शुरुआत करते हुए अंडर-16 राष्ट्रीय रेकार्ड बनाने के लिए 53.22 सेकेंड का समय लिया। वह नवंबर 2019 से ऊटी की ऊंचाई में कोच अर्जुन अजय के तहत प्रशिक्षण ले रही हैं और इस सीजन में उन्होंने काफी प्रगति की है।

हीना कहती हैं, सर (कोच) ने मुझसे कहा कि मैं राष्ट्रीय रेकार्ड तोड़ सकती हूं और यहां तक कि चौंपियनशिप रेकार्ड भी संभव है। इसलिए मैंने अपना बेहतर देने पर ध्यान केंद्रित किया है। मुझमे काफी आत्मविश्वास है, लेकिन मैं अति आत्मविश्वासी नहीं बनना चाहती। मुझे बेहतर करना है।

उनके कोच अजय का कहना है कि उसकी प्रगति सुचारू होना जरूरी है। मैं हर बिंदू पर ध्यान देता हूं। जब स्पाइक्स के साथ दौड़ने की बात आती है, तब भी मैं उसके वर्कआउट को लेकर सावधान रहता हूं। उसमें बहुत क्षमता है। वह लंबी है, उसके कदम अच्छे हैं और उसमें कुछ कर गुजरने की चाह है।

एशियाई चौंपियनशिप के बाद अजय की निगाहें सितंबर में हुआंगझोउ में होने वाले एशियाई खेलों पर टिकी हैं। उनका कहना है कि हीना को अब वे अगले साल विश्व जूनियर चौंपियनशिप के लिए तैयार करना चाहते हैं। वे कहते हैं, उसने अच्छा समय निकाला है और हम देखेंगे कि क्या वह आगामी खेलों के चयन के लिए अंतर- राज्यीय प्रतिस्पर्धा में टक्कर दे सकती है। अजय के मुताबिक, उन्होंने दो बार विश्व जूनियर मिश्रित रिले पदक विजेता प्रिया मोहन को भी प्रशिक्षित किया है।

हीना ने 200 मीटर रजत और टीम मेडले में स्वर्ण पदक जीता। कई ओलंपिक पदक विजेता एलिसन फेलिक्स को वे अपना रोल माडल मानती । उसके माता- पिता कबड्डी खिलाड़ी हैं और उसके पिता ने उसे दौड़ (स्प्रिंट्स) से परिचित कराया जब यह सिर्फ पांच साल की थी। वे कहती हैं, बहुत छोटा था, जब मेरे पिता मुझे मैदान में ले गए थे। वह मुझे एलिसन फेलिक्स के वीडियो दिखाया करते थे। तभी से मैं 400 मीटर का धावक

बाक़ी पेज 11 पर

स्वास्थ्य

गर्भावस्था में ऑटिज्म

ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (एएसडी) एक ऐसी स्थिति है, जहां किसी व्यक्ति को सामाजिक कौशल, बोलने और समाज के साथ संपर्क स्थापित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह एक प्रकार की डेवलपमेंटल डिसएबिलिटी है, जिसमें वह ठीक प्रकार से संवाद करने और खुद को अभिव्यक्त करने की क्षमता खो देता है। भारत में 0.2 प्रतिशत बच्चे इससे प्रभावित हैं। लेकिन इनकी संख्या अधिक हो सकती है, क्योंकि बहुत- से लोगों की पहचान नहीं हो पाती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। एएसडी के कई प्रकार हैं।

एएसडी पीड़ितों में अलग-अलग गुण और अक्षमताएं या चुनौतियां होती हैं। ऐसे लोगों को दैनिक जीवन में सहायता की जरूरत होती है, जबकि कुछ पूरी तरह स्वतंत्रा होकर रह सकते हैं। ऑटिज्म के कारण अनिश्चित हैं। ये पर्यावरणीय, जैविक और आनुवांशिक कारकों का संयोजन हो सकते हैं। एएसडी अक्सर गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विकार, दौरे, नींद विकार, चिंता, अवसाद और ध्यान संबंधी अन्य मुद्दों से जुड़ा होता है। क्या है वजह : ऑटिज्म के जोखिम कारकों में किसी अपने को एएसडी होना, माता या पिता में एएसडी का पारिवारिक इतिहास, माता-पिता में नाजुक एक्स सिंड्रोम, मिर्गी जैसी आनुवांशिक या क्रोमोसोमल स्थितियां, माता-पिता में ऑटोइम्यून रोग, 35 वर्ष से अधिक उम्र में माता-पिता बनना, गर्भावस्था के दौरान रूबेला और सीएमवी जैसे संक्रमण, पोषक तत्वों की कमी, एंटीपीलेप्टिक्स (वैल्प्रोएट), एंटीडिप्रेसेंट (एसएसआरआई) जैसी दवाएं आदि शामिल हैं। समय से पहले प्रसव पीड़ा, जन्म के समय शिशु का कम वजन, गर्भावधि मधुमेह, प्रसव के दौरान समस्याओं की वजह से ऐसा होता है। इसके अलावा प्लास्टिक की वस्तुओं (बोतल, कप, कंटेनर), पेंट, नए कालीन आदि में पाए जाने वाले विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने से भी यह स्थिति बनता है। इन विषाक्त पदार्थों में बीपीए, पीबीडीई, पीसीबी, पीसीडीडी आदि शामिल होते हैं। इसके साथ ही यातायात के धुएं के कारण वायु प्रदूषण, सीसा और पारा जैसी भारी धातु और प्रसवपूर्व तनाव एवं चिंता भी इसकी वजह है। लड़कों में यह 14 गुना ज्यादा देखा जाता है।

क्षणों की पहचान एएसडी को 6-12 महीने की उम्र में भी देखा जा सकता है, लेकिन आमतौर पर यह 3 साल की उम्र में होता है। सामान्यतः यह जीवन भर रहता है।

शुरुआती पहचान और उचित उपचार से विकार को कम किया जा सकता है। कुछ बच्चों में यह चिंता, अवसाद और एडीएचडी (अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी (डिसऑर्डर) से जुड़ा होता है। इसका निदान संदेह पर आधारित है, इसलिए चिकित्सा परीक्षण या अन्य उपकरण जैसे कोई खास तरीके नहीं हैं। आमतौर पर चिकित्सक पीड़ित के व्यवहार और विकास के आधार पर उपचार करते हैं। गर्भावस्था में ऑटिज्म के लक्षणों की पहचान के लिए शोध जारी हैं। अ०टिज्म के जोखिम को कम करने के लिए कुछ कदम उठाए जा सकते हैं, लेकिन इसे पूरी तरह से रोक पाना संभव नहीं है।

उपाय भी जान लें दंपति की उम्र 21 से 35 वर्ष हो, जब ये माता-पिता बनें। चिंता, तनाव और मिर्गी की स्थिति में सुरचित दवाओं का उपयोग करें। ओबीजी का इलाज करने और मधुमेह के पर्याप्त नियंत्राण के साथ नियमित प्रसवपूर्व जांच कराएं। समयपूर्व प्रसव, जन्म के समय कम वजन के जोखिम कारकों की पहचान कर समय पर उनका उपाय करें। नियमित रूप से व्यायाम करें। पर्याप्त पोषण, फोलेट, ओमेगा 3, विटामिन डी3, आयरन और कैल्शियम का इस्तेमाल करें। चिंता और तनाव को कम करें। बच्चे को अधिक समय तक स्तनपान कराएं। सैलून, नए घरों, कालीनों, पेंट, यातायात से निकलने वाले धुएं से बचें। जैविक पदार्थ खाने की कोशिश करें। भोजन और पानी को प्लास्टिक के बर्तनों में न रखें। गर्भावस्था में संक्रमणों की पहचान कर समय पर उपचार कराएं। ❑❑

शेष.... प्रथम पृष्ठ

ज्यादा होना चाहिए। बुजुर्ग व्यक्ति परिवार को संभाले होते है, जिस घर में बुजुर्ग नहीं होते यहां परंपरा, संस्कार, मवाद, रिश्ते- नाते, पोड़ियों से बनी पहचान छिन्न-भिन्न होने की संभावना अधिक होती है। बुजु के प्रति दुर्व्यवहार बंद होना चाहिए। दुर्व्यवहार करनेवाले लोग भी कुछ सालो में बुजुर्ग बनकर इसी अवस्था से गुजरेंगे और कोई नहीं बता सकता कि हमारा आने वाला कल कैसा होगा। बुजुर्गों के प्रति स्नेह और अपनापन रखें, उनकी ज़रूरतों को ध्यान में रखकर उनका ख़्याल रखें। जीवन में दूसरों से वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम दूसरों से खुद के लिए अपेक्षित करते है। बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल की ज़िम्मेदारी पूर्णत बच्चों की है, परिवार की है।

बुजुर्गों के प्रति दुर्व्यवहार होने पर तुरंत मदद के लिए एल्डर लाइन 14567 टोल-फ्री नंबर पर कॉल करें। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा स्थापित वरिष्ठ नागरिकों के लिए यह एक राष्ट्रीय हेल्पलाइन है, यह नंबर सुबह 8:00 बजे से रात 8:00 बजे तक उपलब्ध रहता है, जो निः शुल्क जानकारी, मार्गदर्शन, भावनात्मक समर्थन, दुरुपयोग के मामलों के क्षेत्र में हस्तक्षेप, बेपर बुजुगों के बचाव, देखभाल, सहानुभूति प्रोत्साहन और पुनर्मिलन प्रदान करता है। हेल्प एज इंडिया के हेल्पलाइन नंबर 1800-180-1253 पर भी कॉल कर सकते है और उनका आधिकारिक नंबर 011-41688955६56 है। हम अक्सर अपने आसपास भी बहुत बार बुजुगों के प्रति दुर्व्यवहार देखते है, लेकिन सब जानकर भी चुप हो जाते है, सबको सम्मान से जीने का अधिकार है, हम जागरूक रहें, मदद करें, अपने नैतिक मूल्यों, संस्कारों और माता-पिता ऋण को कभी न भूलें, इंसान बनकर मानवता के साथ जिएं। ❑❑

शेष.... मैं-मैं के अहंकार वाली इनेलो...

मजबूती के साथ चुनाव मैदान में उतरेगी। मैं कई बार कह चुका हूं कि अगला चुनाव उचाना से ही लड़ूंगा, उचाना की जनता ने मुझे बहुत प्यार दिया है और आगे भी मुझे आशीर्वाद देगी।

सवालः- कर्नाटक की जीत से कांग्रेस उत्साहित है, हरियाणा में अगली सरकार होने का दावा किया जा रहा है, क्या कहेंगे?

जवाबः- कांग्रेस के नेताओं को ऐसा सोचना जल्दबाज़ी होगी, हरियाणा में कर्नाटक की जीत का कोई असर नहीं है। 4 महीने बाद राजस्थान और फिर लोकसभा चुनाव के बाद ही सही, तस्वीर सामने आएगी।..लोकसभा चुनाव भाजपा के साथ गठबंधन में ही लड़ने का इरादा है, बाकी समय पर निर्भर है।

सवालः- भाजपा-जजपा गठबंधन को लेकर सियासी गलियारे में कई तरह की चर्चाएं चल रही हैं, गठबंधन कब तक बरकरार रहेगा?

जवाबः- सच तो यह है कि जिस दिन से भाजपा-जजपा का गठबंधन हुआ और मैंने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली, उसी दिन से ही तीन महीने में गठबंधन टूटने की बातें कही गई लेकिन साढ़े तीन साल बीत चुके हैं ओर अभी तक मज़बूती के साथ गठबंधन चल रहा है। मेरा इरादा है कि लोकसभा चुनाव में भी दोनों दल मिलकर चुनाव लड़ेंगे लेकिन अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगा, उसी समय की परिस्थितियों पर काफी कुछ निर्भर करेगा ।

सवालः- कांग्रेस की ओर से किसानों की फसलों का सही मुआवज़ा नहीं मिलने का आरोप लगाए जा रहे हैं, क्या कहेंगे?

जवाबः- कांग्रेस और उनके नेता खासकर भूपेंद्र सिंह हुड्डा को यह आरोप लगाने से पहले यह सोचना चाहिए कि उनकी सरकार में 2 वर्ष के बाद किसानों के डेढ़ रुपए से 5 रुपए तक के चौक बांटे गए थे। मेरा सौभाग्य है कि आज ही मैंने हज़ारों किसानों के खाते में मुआवज़ा राशि भेजी है।

सवालः- सरकार में आपके पास महत्वपूर्ण विभागों की जिम्मेवारी है, अपने विभागीय कार्यों की प्रगति से कितना संतुष्ट हैं?

जवाबः- कोरोना काल की चुनौती के बाद हरियाणा में जी.एस.टी. व आबकारी राजस्व में करीब 22 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है, जो पंजाब ओर यू.पी. से बेहतर है। इसी तरह से उद्योग विभाग में मारूति और सुजूकी जैसी कंपनियों ने निवेश किया है। राजस्व विभाग में स्टांप ड्यूटी के तौर पर भारी राजस्व आया है। इसी तरह से हिसार में अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट बनाने सहित एविएशन के क्षेत्रा में कई तरह से सुधार किए गए हैं। ❑❑

शेष.... मंज़र पस-मंज़र

बच्चे ही कक्षा दो का पाठ पढ़ पाते हैं।

देश के भीतर राज्य, शहरों और गांव में एक बहुत बड़ा डिजिटल डिवाइड पैदा हो गया है। ग्रामीण बच्चों के पास न तो कम्प्यूटर है और न ही इंटरनेट की सुविधा। जबकि शहरों और महानगरों में यह सुविधाएं मौजूद हैं। कुछ महानगरों को छोड़कर देश भर में सरकारी स्कूलों की हालत भी काफी खस्ता है। शिक्षा को लेकर अमीर और ग़रीब में एक बहुत बड़ी खाई पैदा हो गई है। अभिभावक महंगे स्कूलों या कालेजों में अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाने में असमर्थ हैं इसलिए सभी को एक समान अवसर उपलब्ध नहीं होते। शिक्षा के ढांचे में अमूलचूल परिवर्तन होना चाहिए। हमें अनुसंधान और नए-नए अविष्कारों पर बल देना चाहिए। क्योंकि वर्तमान सभ्यता का स्वरूप निरंतर किए गए आविष्कारों तथा अनुसंधानों का ही परिणाम है। विदेशों में पढ़े छात्रा आज बिजनेस हो या आईआईटी क्षेत्रा स्टार्टअप हो या टैक्नीकल क्षेत्रा उनमें सफल हो रहे हैं। वहां की शिक्षा किताबी नहीं व्यावहारिक है। ❑❑

शेष.... भूतों की कहानी....

न पानी की कोई व्यवस्था । केवल एक दरवाजा और एक गलियारा है, जहां से-सूरज की रोशनी और हवा अंदर आती है।

दिल्ली टूरिज्म के अनुसार, इस महल की सैर करने के लिए प्रति व्यक्ति की एंट्री फीस 800 रुपये से अधिक है, जिसमें शाम 5:30 से 7 बजे तक समय निर्धारित किया गया है। इसमें एक गाइड और बैग मुहैया कराया जाएगा। बैग में पानी की बोतल, जूस, फल, टोपी समेत कई चीजें दी जाएंगी। महल में कम से कम 6 लोगों का एक समूह और अधिक से अधिक 20 लोगों का समूह प्रवेश कर सकता है। यहां 15 वर्ष से कम उम्र के बच्चे इस सैर में शामिल नहीं हो सकते हैं।

एम्स परिसर होगा वाई-फाई से लैस, नहीं टूटेगा सिग्नल

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), दिल्ली में उपचार करवाने आ रहे मरीजों को नेटवर्क के लिए परेशान नहीं होना होगा।

एम्स परिसर को पूरी तरह से वाई-फाई बनाने की दिशा में काम कर रहा है। इसके लिए एम्स निदेशक डॉ. एम श्रीनिवास के आदेश पर एक समिति बनाई गई है। यह समिति एम्स परिसर को 24 घंटे दिन रोगी देखभाल को बेहतर बनाने के लिए वाई-फाई नेटवर्क को मजबूत करेगी।

अभी नेटवर्क कमजोर होने के कारण डॉक्टर, स्टाफ सहित मरीजों को काफी परेशानी होती है। एम्स से मिली जानकारी के अनुसार परिसर में 24 घंटे सातों दिन रोगी देखभाल, शिक्षाविदों और अनुसंधान गतिविधियां होती हैं। इनकी सुविधा के लिए परिसर में व्यापक सुरक्षित वाई-फाई कनेक्टिविटी की आवश्यकता है। अभी केवल नई इमारतों में वाई-फाई सक्षम है और परिसर के अधिकांश हिस्से में वाई-फाई कनेक्टिविटी बहुत खराब है, जिससे रोगियों, कर्मचारियों और यहां आने वालों को परेशानी हो रही है।

इसके अलावा कुछ लोग अपना वाई-फाई नेटवर्क स्थापित करने का प्रयास करते हैं जो साइबर खतरों का बन सकता है। बीते दिनों भी एम्स में साइबर अटैक हुआ था जिससे अ०नलाइन सिस्टम बुरी तरह से प्रभावित हुआ था। ऐसे में यहां सुरक्षित सिस्टम विकसित किया जाएगा। बता दें कि एम्स में रोजाना 10 हजार से अधिक मरीज उपचार करवाने आते हैं। इसके अलावा बड़ी संख्या में मरीज अन्य सेंटर व विभागों में आते हैं। ऐसे में सुरक्षित नेटवर्क के अभाव में सभी को परेशानी होती है।.

डेटा-फाइलों को साझा करने में मिलेगी मदद

एलसीयू को बेहतर ढंग से चलाने में मदद मिलेगी। साथ ही ई-लाइब्रेरी मज़बूत वाई-फाई कनेक्टिविटी से एम्स में ई-कैजुअल्टी और ई- तक पहुंच आसान होगी। एम्स में एक सुरक्षित नेटवर्क पर डेटा और फाइलों को सहज साझा करने में मदद करेगी। ❑❑

शेष.... लंबी दौड़ की विश्व....

बनना चाहती थी। वह आसानी से दौड़ती हैं और मैंने उनकी शैली को अपनाने की कोशिश की है।

हॉकी में भारतीय महिलाओं ने ऐतिहासिक सफलता अर्जित की। भारत ने पहली बार जूनियर एशिया कप अपने नाम किया और वो भी टूर्नामेंट की सबसे सफल टीम दक्षिण कोरिया को हराकर । भारत ने चार बार की विजेता द. कोरिया को फाइनल में 2-1 से शिकस्त दी। भारतीय टीम दूसरी बार फाइनल में पहुंची थी और पहली बार चौम्पियन बनी। इस महीने की शुरुआत में भारत की पुरुष टीम ने पाकिस्तान को हराकर जूनियर एशिया कप खिताब, अपने नाम किया था। पाइनल में भारत की जीत में अहम भूमिका निभाते हुए अन्नू ने 21वें और नीलम ने 40वें मिनट में गोल किए। वहीं, कोरिया की ओर से पार्क सेओ ओन ने 24वें मिनट में गोल किया। भारतीय महिला टीम ने मैच की शुरुआत गेंद पर नियंत्राण के साथ आक्रामक रवैये के साथ की। मैच के पहले ही मिनट में भारत के पास पेनल्टी क०र्नर का एक मौका था, लेकिन वे इसे गोल में नहीं बदल सकीं। भारतीय टीम ने दूसरे बवार्टर में भी जोरदार प्रदर्शन जारी रखा, जिसके परिणामस्वरूप उन्हे..21वें मिनट में सफलता मिली। अन्नू ने 21वें मिनट में पेनल्टी स्ट्रोक से गोल कर टीम को 1-0 की बढ़त दिला दी। 24वें मिनट में कोरिया की येओन ने स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया। दूसरा हाफ भी आक्रामक रूप से शुरू हुआ और भारत की ओर से नीलम ने 40वें मिनट में पेनल्टी क०र्नर से गोल कर मैच का रुख पलट दिया। तीसरे क्वार्टर में कोई और गोल नहीं हुआ और भारत ने जीत की ओर कदम बढ़ाते हुए 2-1 की बढ़त बनाए रखी। चौथे और निर्णायक क्वार्टर की शुरुआत से ही भारत के डिफेंस ने अपनी जोरदार लय बरकरार रखी और बढ़त को कम नहीं होने दिया। ❑❑

शेष.... धुम्रपान ...

तंबाकू के पाउच का इस्तेमाल किया जाता है। वैपिंग की दुकानें प्रायः शहरों के महंगे व्यापारिक और रिहायशी इलाकों में मिल जाती हैं, जबकि कोटिन और अन्य हानिकारक तम्बाकू उत्पाद भी जनरल स्टोर्स में थोक में बिकते हैं। क़ौसर अब्बास ने कहा कि ये ताम्हाको उत्पाद विशेष रूप से आवासीय क्षेत्रों, स्कूलों और विश्वविद्यालयों के आसपास की छोटी दुकानों में मिल सकते हैं। उन्होंने नाबालिग बच्चों के प्रति कई अभिभावकों की लापरवाही पर चिंता व्यक्त करते हुए एक उदाहरण भी दिया, हाल ही में लाहौर के एक स्कूल कई दस साल के बच्चों के बैग में कोटिन पाउच मिले। स्कूल प्रबंधन द्वारा जब इन बच्चों के माता-पिता को बुलाया गया तो उन्होंने कहा कि पाउच पूरी तरह से हानिरहित है, हालांकि ऐसा नहीं है. तो ऐसी अज्ञानता और लापरवाही भी खेदजनक है। ❑❑

बड़े जानवर की क़ुर्बानी का इंतज़ाम

गुज़िशता साल की तरह इस साल भी जामिआ दार-ए-अरक़म चाउंडिया। कलां, पाली, राजस्थान में बड़े जानवर की क़ुर्बानी का माक़ूल इंतिज़ाम किया गया है

फ़ी हिस्साः- 3000/- ● 2500/-

लिहाज़ा जो हज़रात अपनी जानिब से या अपने मरहूमीन की जानिब से क़ुर्बानी कराना चाहते हैं वो मुंदरजा ज़ैल हज़रात से राबिता क़ायम करें:-

मुहम्मद नईम फ़ैंसी स्टोर, 1555, चितली क़बर, जामा मस्जिद दिल्ली

मोबाइलः- 9250023769, 9211958811, 9250112055

(मौलाना) मुहम्मद अनवर (ख़ादिम मदरसा हाज़ा) 8955342979

(मौलाना) नूर इलाही अमीनी (मुहतमिम) : 9828681048, 9680547978

जामिआ दार-ए-अरक़म, चांवण्डिया कलां, पाली, राजस्थान

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date :18June 2023 Posting Days : MON. - TUE. at N.D.P.S.O. New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

मंज़र पस-मंज़र मीम.सीन.जीम

•चिंता की दर•शिक्षा विश्व रैंकिंग में पिछड़ता भारत

चिंता की दर

यह सही है कि विश्व स्तर पर होने वाली राजनीतिक उथल-पुथल, युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं का असर समूची दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है और यह कोई अचानक पैदा हुई स्थिति नहीं है। लेकिन पिछले कुछ साल इस लिहाज से ज्यादा संवेदनशील रहे हैं कि कई स्तर पर पैदा हुई अस्थिरता ने अमूमन सभी देशों की आर्थिक गतिविधियों पर नकारात्मक असर डाला और स्वाभाविक ही वैश्विक स्तर पर होने वाले आकलनों में इसे लेकर चिंता उभरी। इसी सिलसिले में विश्व बैंक ने जिस तरह वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में गिरावट आने की आशंका जताई है, अगर वह उसी अनुपात में सचमुच हुआ, तो पहले से ही बहुस्तरीय संकटों का सामना करने वाले देशों के लिए कई चुनौतियां खड़ी होंगी। इसे लेकर जिस तरह के आकलन सामने आए हैं, उसमें खुद धनी और विकसित देश भी इसकी चपेट में आ सकते हैं, लेकिन बुनियादी ढांचे में वैकल्पिक व्यवस्थाओं के बूते कुछ देश तात्कालिक तौर पर तो इसका सामना कर भी ले सकते हैं, लेकिन उनके लिए भी शायद बड़े झटकों को सहना मुश्किल ही होगा। असली संकट वैसे देशों के सामने आ सकता है, जो पहले ही कई स्तर पर आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं। इसके बरक्स कुछ गरीब या विकासशील देश तो अपनी बुनियादी ज़रूरतों के लिए भी ताकतवर और धनी देशों पर निर्भर हैं।

दरअसल, पिछले तीन-चार सालों के दौरान देशों को बुरी तरह प्रभावित करने वाले जैसे हालात पैदा हुए, उसका असर स्वाभाविक ही था। पहले महामारी के असर से उपजी त्रासदी और उसका दीर्घकालिक प्रभाव। इसके बाद पूर्णबंदी और उसकी वजह से दुनिया भर में अर्थतंत्रा का एक तरह से ढह जाना। फिर जब कोरोना का जोर थमा और तमाम देश इससे उबरने की कोशिश में थे कि इसी बीच रूस और यूक्रेन में युद्ध शुरू हो गया। जाहिर है, इस सबके बीच आर्थिक गतिविधियां जिस प्रतिकूल हालात का सामना कर रही हैं, उसका मिलाजुला असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ना ही है। फिर अभाव से जूझते देशों और उनके नागरिकों की निजी आर्थिक मुश्किलें भी बढ़ती रहीं. मगर इसके समांतर परिस्थितियों का हवाला देकर बैंकों की ओर से ब्याज दरें भी ऊंची रखी गई। विश्व बैंक दरअसल दुनिया के एक सौ नवासी देशों में गरीबी उन्मूलन की नीतियों पर काम कर रहा है। उसने अपने ताजा आकलन में कहा है कि वर्ष 2023 में वैश्विक अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर 2.1 फीसद रहेगी, जबकि पिछले साल यह 3.1 फीसद रही थी। यानी महामारी और पूर्णबंदी के उथल-पुथल के दौर में भी विश्व की अर्थव्यवस्था में वृद्धि दर मौजूदा दौर से बेहतर स्थिति में थी।

यह छिपा नहीं है कि कोरोना महामारी की घोषणा के बाद दुनिया के लगभग सभी देशों में उसके संक्रमण से बचाव के लिए जिस तरह की पाबंदियां लगाई गई, उसका सीधा असर वैश्विक आर्थिक परिश्य पर पड़ा। उस दौरान लगे झटकों से बहुत सारे वैसे क्षेत्रा अब भी नहीं उबर पाए हैं, जो किसी देश की आर्थिक रीढ़ हुआ करते थे। इसके बाद अमूमन सभी देशों को महामारी के दौर में अपने लाचार नागरिकों को भूख से बचाने की भी चुनौती खड़ी हो गई थी। कोरोना का जोर कम होने के बाद सभी देश हालात से निपटने की कोशिश में ही थे कि रूस और यूक्रेन के बीच शुरू हुए युद्ध ने वैश्विक स्तर पर आर्थिक मोर्चे पर गहरा नकारात्मक असर डाला। अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस सबका असर वैश्विक स्तर द्य पर सभी देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर कैसा पड़ा होगा। इस लिहाज से देखें तो वृद्धि दर में गिरावट का आकलन बस नतीजों का आईना है, जिसमें सभी देशों को विपरीत हालात का सामना करना पड़ा।

शिक्षा विश्व रैंकिंग में पिछड़ता भारत

शिक्षा मंत्रालय हर साल शिक्षा संस्थानों की रैंकिंग जारी करता है। इस बार एनआईआरएफ रैंकिंग के मुताबिक आईआईटी मद्रास को देश का सर्वेश्रेष्ठ शिक्षण संस्थान घोषित किया गया है। जबकि दूसरे नम्बर पर भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलुरु है। इंजीनियरिंग कैटेगरी में आईआईटी मद्रास की रैंक लगातार आठवें वर्ष भी बरकार रही है। इसके बाद आईआईटी दिल्ली दूसरे नम्बर पर और तीसरे नम्बर पर आईआईटी मुम्बई है। इसी तरह मैनेजमेंट कालेज, फार्मेसी कालेज, लॉ कालेजों की भी रैंकिंग की गई। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में शिक्षा सुधार लगातार जारी है। उच्च शिक्षा उद्योग पर्याप्त शिक्षण क्षमता प्रदान करने के लिए संघर्ष कर रहा है लेकिन विडम्बना यह है कि भारत का कोई भी संस्थान वैश्विक शीर्ष सौ संस्थानों में अपनी जगह नहीं बना पाया। वैश्विक टॉप 200 में केवल तीन भारतीय संस्थान ही जगह बना पाए हैं। कुल मिलाकर 41 भारतीय संस्थान और विश्वविद्यालय हैं जिन्होंने इस वर्ष क्यूएस विश्वविद्यालय रैंकिंग सूची में जगह बनाई है।

क्यूएस विश्व रैंकिंग सूची से पता चलता है कि भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), बेंगलुरु ने 155 वां वैश्विक रैंक हासिल किया है जो पिछले साल 186वें स्थान से ऊपर है और भारतीय संस्थानों में पहले स्थान पर है। आईआईएससी बेंगलुरु साइटेशन पर फैकल्टी इंडिकेटर में विश्व स्तर पर शीर्ष संस्थानों में भी उभरा है। यह संस्थानों द्वारा उत्पादित अनुसंधान के वैश्विक प्रभाव को इंगित करता है। दोबारा, जब विश्वविद्यालयों को संकाय आकार के लिए समायोजित किया जाता है। तो प्रति संकाय सूचक के उद्धरण ने आईआईएससी को 100ध 100 हासिल किया। शीर्ष 200 में अन्य दो स्थानों पर भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बॉम्बे और आईआईटी दिल्ली वैश्विक 172वें और 174वें स्थान पर हैं। विशेष रूप से, आईआईटी ब०म्बे और आईआईटी दिल्ली दोनों ने पिछले साल से आईआईटी ब०म्बे को 177 वें और आईआईटी दिल्ली को पिछले साल 185 वें स्थान से अपग्रेड किया। फिर से, 200 और 300 शीर्ष वैश्विक संस्थानों के बीच, आईआईटी मद्रास ने 250 वां स्थान हासिल किया, जो कि पिछले वर्ष 255 वें स्थान पर है, आईआईटी कानपुर ने 264 वां स्थान हासिल किया और आईआईटी खड़गपुर ने 270 वां स्थान हासिल किया, दोनों अपने पिछले रैंक से ऊपर खड़े हैं। इससे पता चलता है कि शीर्ष 300 वैश्विक विश्वविद्यालयोंध् संस्थानों में छह भारतीय संस्थान अपनी पहचान बना सकते हैं।

विश्व रैंकिंग में भारत के पिछड़ने के कई कारण हैं। पूरी दुनिया शिक्षा के क्षेत्रा को बेहतर बनाने में लगी हुई है। हर वह सम्भव कोशिश की जा रही है जिससे शिक्षा व्यवस्था को नया आयाम दिया जा सके। भारत में कुछ बड़े विश्वविद्यालयों आईआईटी, आईआईएम और कुछ अन्य को छोड़कर कोई बड़े बदलाव नहीं किए गए। बड़े बदलाव नहीं होने के कारण आधुनिक युग में भारतीय शिक्षा प्रणाली को कमजोर माना जाता है। यहां प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक चुनौतियां ही चुनौतियां हैं। यही कारण है कि भारत से प्रतिभाओं का पलायन लगातार हो रहा है। सबसे बड़ा सवाल शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर बना हुआ है। आज हर अभिभावक अपने बच्चों को शिक्षा के लिए विदेश भेजने के इच्छुक दिखाई देते हैं।

दरअसल हमने कभी उन कारणों की तलाश ही नहीं की जिनके चलते ऐसी स्थिति पैदा हुई है। भारत की बात करें तो यहां केवल 20.4 फीसदी आबादी ही यूनिवर्सिटी या कॉलेज या फिर वोकेशनल कोर्स पूरा कर पाई है। हालांकि भारत सरकार ने शिक्षा के लिए अधिक बजट आवंटन करने की घोषणा की है। शिक्षा के क्षेत्रा में निजी क्षेत्रा की महत्वपूर्ण भूमिका है लेकिन निजी क्षेत्रा वही निवेश करता है जहां उनको फायदा नज़र आए। निजी क्षेत्रा ने शिक्षा का पूरी तरह से व्यवसायीकरण कर दिया है जिसके चलते शिक्षण की गुणवत्ता में बहुत कमी आई है। किसी भी शिक्षण संस्थान की गुणवत्ता उसकी फैकल्टी पर निर्भर करती है।

फैकल्टी में योग्य और प्रशिक्षित शिक्षक निजी क्षेत्रा युवा स्नातकों को ऐसे प्रोफैसरों के रूप में भर्ती करते हैं जिनके पास कोई अनुभव या ज्ञान नहीं होता। वह ज्यादा से ज़्यादा मुनाफा कमाना चाहता है। निजी क्षेत्रा को छात्रों में रचनात्मकता, नए शोध और नए कौशल को सीखने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने में कोई रुचि नहीं है। देश में कोटा प्रणाली बहुत ही विवादास्पद है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में कोटा प्रणाली अभी भी बाधक बनी हुई है। युवा पीढ़ी को सिर्फ नौकरी और भारी-भरकम वेतन पैकेज लेने में ही अधिक रुचि है। इसलिए अभिभावक भी बच्चों को देश की सेवा के लिए प्रेरित करने की बजाय अच्छी नौकरी तलाश करने के लिए ही प्रेरित करते हैं। अगर प्राथमिक शिक्षा की बात की जाए कक्षा एक में केवल 16 फीसदी बच्चे ही निर्धारित स्तर का पाठ पढ़ सकते हैं। जबकि 40 फीसदी बच्चे अक्षर भी नहीं पहचान सकते। कक्षा 5 में केवल 50 फीसदी

बाक़ी पेज 11 पर

मान के कार्यालय में रोज़ाना 7,500 रुपए से ज़्यादा का चाय नाश्ता

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी को खाने के ख़र्च पर घेरने वाले पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान खुद चाय, नाश्ते के ख़र्च को लेकर विवादों में घिर गए हैं। 16 मार्च 2022 को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले भगवंत मान के कार्यालय का महज़ 13 महीने के भीतर 31 लाख रुपए से अधिक का चाय-नाश्ते का बिल आ गया है। जानकारी के अनुसार औसतन यह प्रतिदिन 7,560 रुपए बैठता है। पटियाला के रहने वाले गुरजत सिंह गोपालपुरी द्वारा सूचना अधिकार कानून (आरटीआइ) के माध्यम से यह जानकारी हासिल की गई है, जिसमें कहा गया है कि मार्च, 2022 का चाय-नाश्ते का बिल 3.38 लाख रुपए था। मार्च के बाद अप्रैल, 2022 में दो लाख 73 हजार 788, मई में तीन लाख 55 हजार 795, जून में तीन लाख 25 हजार 248, जुलाई में तीन लाख 58 हजार 347, अगस्त में दो लाख 33 हजार 305, सितंबर में 2 लाख 82 हजार 347, अक्टूबर में एक लाख 64 हजार 573, नवंबर में एक लाख 39 हजार 630 और दिसंबर में एक लाख 54 हजार 594 रुपए खर्च किए गए। जनवरी, 2023 में चाय-नाश्ते पर एक लाख 56 हज़ार 720, फरवरी में एक लाख 62 हजार 183, मार्च में एक लाख 73 हजार 208 और अप्रैल में एक लाख 24 हजार 451 रुपए खर्च किए गए हैं। ये बिल सिर्फ मुख्यमंत्री कार्यालय के थे।

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-

❶ मनीआर्डर द्वारा
❸ ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण

SHANTI MISSION
SBI A/c 10310541455
Branch: Indraprastha Estate
IFS Code: SBIN0001187

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in ——— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन :- 011-23311455

जमीअत ट्रस्ट सोसायटी की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक मोहम्मद तैयब ख़ान ने शेरवानी आर्ट प्रिंटर्स, 1480, क़ासिमजान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवाकर मदनी हाल, न. 1, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया। संपादक:- मोहम्मद सालिम, फोन:- 23311455, 23317729, फैक्स:- 23316173